

Catalogue of the Sanskrit Manuscripts



Vol. I

Compiled by:

Dr. Preeti Agrawal
Cataloguer of Sanskrit Manuscripts

Assisted by:

Dr. Abusad Islahi
Library & Information Officer



Prof. S.M. Azizuddin Husain
Director

Rampur Raza Library
Ministry of Culture
Govt. of India
Rampur

संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची

खण्ड–1

संकलनकर्त्ता

डा0 प्रीति अग्रवाल
सूचीकर्त्ता, संस्कृत पाण्डुलिपि

परामर्शक
डा0 अबुसाद इस्लाही
पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन
निदेशक
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार
रामपुर

Catalogue of the Sanskrit Manuscripts Vol. I

पुस्तक का नाम	:	संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची
प्रकाशक	:	प्रो० एस० एम० अज़ीजउद्दीन हुसैन निदेशक, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर
प्रकाशन वर्ष	:	2014
ISBN	:	978-93-82949-19-0
प्रतियाँ	:	500
मूल्य	:	रु० 500/–
मुद्रक	:	इण्डस्ट्रियल प्रिंटर्स को०सो०लि०, रामपुर
टाइटिल	:	हस्तलिखित संस्कृत पाण्डुलिपियाँ

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
रामपुर – 244901
उत्तर प्रदेश – भारत

website : www.razalibrary.gov.in
e-mail : directorrazalibrary@gmail.com
Telephone : +91-595-2325045, 2327244, 2325346
Fax : +91-595-2340548

Catalogue of the Sanskrit Manuscripts

Vol. I

Compiled by:

Dr. Preeti Agrawal
Cataloguer of Sanskrit Manuscripts

Assisted by:

Dr. Abusad Islahi
Library & Information Officer

Prof. S.M. Azizuddin Husain
Director
Rampur Raza Library
Ministry of Culture
Govt. of India
Rampur

Contents

पुरोवाक्

ज्ञान को अधिग्रहण करना और सीखना दोनों ही धार्मिक विषय हैं। इस्लाम में इन्हें उच्च स्थान प्राप्त है। पैगम्बर हजरत मुहम्मद निर्देश देते हैं– "गहवारे से लेकर कब्र तक मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।" हजरत अली कहते हैं– "जिसने मुझे एक शब्द भी सिखा दिया, उसने मुझे अपना दास बना लिया।" इस्लाम ने 7वीं सदी में शिक्षा को सभी के लिए फैलाया। इस्लाम में शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए धर्म, जाति, लिंग, सम्प्रदाय, उम्र आदि की कोई पाबन्दी नहीं थी। शीघ्र ही शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करने की आवश्यकता हुई, ये शिक्षण संस्थाऐं मदरसों के नाम से जानी जाने लगी। ये मदरसे अपने यहाँ पुस्तकालय भी रखते थे, जिनमें अच्छी पुस्तकों का संग्रह होता था। जब इब्न–ए–सीना ने सस्सानिद के पुस्तकालय का निरीक्षण किया, तो वह किताबों के इतने अच्छे संग्रह को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने टिप्पणी की– मैनें अपने जीवन में इतना अच्छा पुस्तकालय कभी नहीं देखा। मैं समझता हूँ कि रज़ा लाइब्रेरी भी साहित्य की दुनिया में वैसा ही अच्छा स्थान रखती है।

भारत अध्ययन का केन्द्र रहा है। तक्षशिला विश्वविद्यालय भारत में सबसे प्राचीन है। जिसका अस्तित्व बुद्ध से भी पहले का है। शायद उपनिषदों (7वीं सदी से पूर्व) के काल में दार्शनिकों ने अपने स्कूल खोले थे और निर्देश देते थे। बुद्ध के समय में यह एक शक्तिशाली शिक्षण केन्द्र बन गया। यहाँ सैन्यविज्ञान, राजनीति विज्ञान, औषधी, दर्शन, धर्म, भाषाऐं और साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। दूसरा केन्द्र नालन्दा था। 5वीं से 12वीं शताब्दी तक राजाओं की लम्बी सफलता एवं उनके द्वारा किये गये रखरखाव ने नालन्दा विश्वविद्यालय को उन्नति एवं समृद्धि दिलायी।

भारत में तुर्की शासकों की विजय ने भारत के शासन में बहुत बदलाव किये जिससे जीवन के बहुत से क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। 11वीं शताब्दी में देबुल, उच्छ, मुल्तान, लाहौर और पानीपत इत्यादि अध्ययन के मुख्य केन्द्र बन गये। दिल्ली के सुल्तानों ने बड़ी संख्या में मदरसों की स्थापना की, जैसे– मुइज़्ज़ी, नसीरिया, अलाई, हौजख़ास इत्यादि। 1258 में बगदाद की तबाही ने दिल्ली को मुस्लिम संसार में एक ख़ास अध्ययन केन्द्र बना दिया। जियाउद्दीन बरनी लिखते हैं – अब

समरकन्द और बुख़ारा आदि के उलेमा, दिल्ली के उलेमा से सहयोग के लिए परामर्श करते हैं। जियाउद्दीन बरनी हमें बताते हैं कि दिल्ली में 14वीं शताब्दी में किताबों की बहुत मांग थी, लिपिक को किताबों की प्रतियाँ लिखने से कोई विराम नही मिलता था। यदि कोई किसी पुस्तक की प्रति मांगता तो लिपिक उसे किताब की दूसरी प्रति देने में उससे एक साल का समय मांगता। एक दिन शेख निजामुद्दीन औलिया के पुराने सहपाठी उन्हें अजोधन में मिले और उन्हें खराब और फटे हुए कपडों में देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने मौलाना निजामुद्दीन से अचम्भित होकर पूछा– "आपके साथ क्या अनहोनी हुई है ?" आप दिल्ली में पढ़ाने का कार्य क्यों नही करते हैं ?आप आज के समय के अच्छे विद्वान हैं और समृद्ध भी हैं। मदरसा–ए–मोइजी, नसीरिया, अलाई, हौजख़ास के पुस्तकालयों में पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। दिल्ली के सुल्तानों ने दिल्ली का स्थान परगना मुख्यालय से बदलकर अन्तर्राष्ट्रीय यश का शहर कर दिया। 1555 में भारत के दरवाजे ईरानी उमरा और उलेमा के लिए खोल दिये गये, जो कि भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विकास था। मुगल बादशाह अकबर (1556–1605 A.D.) ने मदरसों का निर्माण करने में अत्यधिक रुचि ली। ईरानी उलेमा अपने साथ किताबों का बड़ा ख़जाना लाये थे। बाबर (1526–1530 A.D) के पास स्वयं का पुस्तकालय था, उसने टिप्पणी की– "वर्षा के दौरान जलवायु बहुत सुखद होती है.. ...... इसका दुष्प्रभाव यह है कि वायु नम और आर्द्र होती है........पुस्तकें तथा सभी नमी के कुप्रभावों से प्रभावित होते हैं।" आगरा के क़िले में और फतेहपुर सीकरी में भी अकबर ने लाइब्रेरी बनवायी। परिणामतः 19वीं सदी में लाल क़िले में बहुत अच्छा पुस्तकालय था, लेकिन 1857 में इसे अग्रेंजों द्वारा लूट लिया गया। 1857 और 1947 में हमने पाण्डुलिपियों का एक बड़ा संग्रह खो दिया। हमने बड़ी संख्या में पाण्डुलिपियाँ खो दी। आज हम ब्रिटिश म्यूजियम में देखते हैं, भारत की पाण्डुलिपियों के बारे में चिन्तित है, जो कि मुख्यतः 1857 और 1947 का परिणाम है।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी विश्व की महत्वपूर्ण लाइब्रेरियों में एक है। यह विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के वर्णन के अतिरिक्त भारतीय इस्लामिक शिक्षा एवं कला का महत्वपूर्ण ख़जाना है। इसकी स्थापना रामपुर के नवाब फ़ैजुल्लाह खाँ द्वारा 1774 ई0 में की गई। रामपुर के नवाब, विद्वानों, कवियों, चित्रकारों, कैलीग्राफरों तथा संगीतकारों के बहुत बड़े संरक्षक रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात रामपुर की रियासत

भारतीय संघ में सम्मिलित कर दी गई। उसके बाद 6 अगस्त 1951 से लाइब्रेरी एक ट्रस्ट के अन्तर्गत आ गई। पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रो0 सैय्यद नूरुल हसन के प्रयासों से भारत सरकार ने 1 जुलाई 1975 ई0 को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी को पार्लियामेण्ट एक्ट 1975 के अधीन राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया। इसके बोर्ड के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल हैं। लाइब्रेरी में अरबी, फारसी, पश्तो, संस्कृत, उर्दू, हिन्दी और तुर्की भाषाओं की 17,000 पाण्डुलिपियाँ हैं। यहाँ चित्रों और विभिन्न भाषाओं के ताड़पत्रों का अच्छा संग्रह है। यहाँ पर लगभग 60,000 मुद्रित पुस्तकें हैं, जो कि विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हैं।

मौलाना शिब्ली नोमानी ने 1884 और 1914 में रामपुर रज़ा लाइब्रेरी का दौरा किया। और उन्होंने एक विस्तृत रिपोर्ट जमा की। उन्होंने सुझाव दिया कि रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग नहीं है, उसको तैयार किया जाये। वे लाइब्रेरी के कर्मचारियों के कार्य से भी संतुष्ट नही थे। पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 1952 में लाइब्रेरी का दौरा किया और रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाने का सुझाव दिया। कैटॅलाग में निम्न बिंदू होने चाहिए– 1. नाम और विषय 2. नम्बर 3. किताब का नाम 4. लेखक का नाम 5. भाषा 6. पाण्डुलिपि या प्रकाशित पुस्तक।

सन् 1857 में हाफ़िज़ अहमद अली शौक, हकीम अज़मल खाँ के निर्देशन में विषय के अनुसार अरबी पुस्तकों की सूची तैयार करने के लिए लाइब्रेरी में नियुक्त किये गये। नवाब हामिद अली खान (1889–1930) के काल में मुंशी अमीर मिनाई, मुंशी अब्दुर्रहीम और अहमद अली खान द्वारा सन् 1889 में रज़ा लाइब्रेरी में स्टॉक रजिस्टर एवं पुस्तकों की सूची तैयार की गई। इस रजिस्टर में इन तीनों व्यक्तियों के हस्ताक्षर उपलब्ध हैं। अब यह रजिस्टर स्वयं एक पाण्डुलिपि बन चुका है। पुस्तकों की सूची बनाने में वर्णानुक्रम का प्रयोग किया गया है। इसमें 9347 पुस्तकें हैं, लेकिन सन् 1904 में नवाब हामिद अली खान के सुझाव से नया रजिस्टर तैयार किया गया। अहमद अली शौक लिखते है– "नवाब खुल्द आशियाँ (नवाब कल्बे अली खान) के काल में तीन भागों में एक रजिस्टर तैयार किया गया। यह सूची वर्णानुक्रम के अनुसार थी, लेकिन विषय के अनुसार वर्गीकरण नही था। इस रजिस्टर में पाण्डुलिपियाँ एवं

प्रकाशित पुस्तकें दोनो थी।" यह कैटॅलाग सन् 1902 में प्रकाशित किया गया। इसमें पाण्डुलिपियों के बारे में अच्छी जानकारी है। फिर उन्होंने कैटॅलाग का दूसरा एवं तीसरा भाग और सुधार के साथ तैयार किया, जो कि 1928 में तैयार किये गये। ये दोनो कैटॅलाग विस्तृत हैं, उन्होंने ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में बने हुए पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग से प्रेरणा ली। वे स्वयं लिखते हैं– "इस कार्य को करने में मौलाना मुहम्मद नबी, रजिस्ट्रार कुतुबखाना एवं अब्दुल्लाह अमृतसरी ने भी सहयोग दिया। लेकिन इस कैटॅलाग में पाण्डुलिपियाँ एवं पुस्तकें दोनो साथ–साथ हैं।" ये कैटॅलाग उर्दू भाषा में लिखे गये हैं।

1932 में मौलाना इम्तियाज़ अली खाँ अर्शी ने नाज़िम–ए–कुतुबखाना का भार संभाल लिया। वे बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे तथा लाइब्रेरी के संग्रह के बारे में उन्हें अच्छी जानकारी थी। उन्होंने रज़ा लाइब्रेरी की अरबी की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने अरबी पाण्डुलिपियों के 6 कैटॅलाग तैयार किये और प्रकाशित कराये। श्री इम्तियाज़ अली खाँ अर्शी 26 नवम्बर 1963 में अपनी प्रस्तावना में लिखते हैं– "यह अरबी पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग का प्रथम भाग है जो रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है।" श्री डी0 एम0 सिन्हा, आई0ए0एस0, सचिव, रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड 27 नवम्बर 1963 में लिखते हैं कि रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग अग्रेंजी भाषा में बनाये जाने की आवश्यकता है। रामपुर में संसार के विभिन्न भाषाओं के विद्वान आते हैं। भाग्यवश वैज्ञानिक अनुसंधानिक और सांस्कृतिक मामलों के मंत्रालय, भारत सरकार ने अरबी और फारसी की पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाने के लिए अनुदान दिया। उनके सहयोग को धन्यवाद देते हुए हम अरबी भाषा की पाण्डुलिपियों का प्रथम कैटॅलाग विद्वानों के समक्ष रखने में सक्षम हुए। अरबी पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग चार खण्डों में बनाया जाना प्रस्तावित है। इसके बाद फारसी भाषा की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग भी इसी पद्धति पर बनाया गया। श्री सिन्हा इस कैटॅलाग के संकलनकर्ता की विशेषताएँ बताते हुए कहते हैं–इस कैटॅलाग के संकलनकर्ता श्री इम्तियाज़ अली अर्शी प्राच्यविद्या के बहुत अच्छे विद्वान हैं। मैं इस बात पर दृढ हूँ कि उनका यह वर्षों का कार्य भारत एवं विदेश से आने वाले कार्यकर्ताओं के लिये आदर्श होगा। मौलाना अर्शी ने 1977 में अरबी भाषा के छः कैटॅलाग पूर्ण किये, परन्तु 1981 में उनकी मृत्यु के बाद यह कार्य रुक गया और तब से

अब तक रुका हुआ ही था। जब मैंने 3 अप्रैल 2012 को रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक के रूप में पद ग्रहण किया, तब मैंने पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाये जाने की ओर विशेष ध्यान दिया। पश्तो भाषा की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग 2012 में रज़ा लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। तुर्की एवं फारसी भाषा के भी दो कैटॅलाग 2014 में प्रकाशित किये गये हैं। संस्कृत की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग बनाने का कार्य भार मैंने डा0 प्रीति अग्रवाल को सौंपा।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने पुस्तकालयों में राष्ट्रीय मिशन के लिए सन् 2006 में नींव डाली एवं 3 फरवरी 2014 को उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन किया। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने लाइब्रेरियों के लिए मिशन का शुभांरभ किया। उनके भाव को ऊपर रखते हुए रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने फारसी, पश्तो, तुर्की और उर्दू पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग प्रकाशित किये। ताकि विद्वानों और दूसरे व्यक्तियों को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी की पाण्डुलिपियों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके।

अभी डॉ0 दानियाल मैक्रोविज, हार्वड यूनिवर्सिटी, अमेरिका ने जून 2013 में लाइब्रेरी का भ्रमण किया। उन्होंने लिखा है कि आपकी लाइब्रेरी भारत की सभी लाइब्रेरियों में सबसे अच्छी है। डॉ0 सीमॉन डब्लू0 फुच्स, जर्मनी ने जुलाई 2013 में रज़ा लाइब्रेरी का भ्रमण किया। उन्होंने लिखा कि मैं आपसे व्यक्तिगत रूप से विदा नहीं ले सका क्योंकि आप दिल्ली में हैं, आपके द्वारा की गयी मदद के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। पूरे पाकिस्तान, ईरान एवं ईराक में रज़ा लाइब्रेरी, एक प्रभावशाली संस्था है और यह एक आशीर्वाद है कि आप इसके निदेशक हैं।

मैं महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश एवं अध्यक्ष रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड श्री राम नायक जी का बहुत आभारी हूँ। मैं श्री श्रीपद यशु नायक, संस्कृति मंत्री, श्री रविन्द्र सिंह, सचिव, संस्कृति मंत्रालय एवं श्री वी0 श्रीनिवास, संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार का भी बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने हमें आर्थिक सहायता प्रदान की। मैं श्रीमती जूथिका पटानकर, प्रमुख सचिव, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश को भी उनके पूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूँ।

मैं डा0 प्रीति अग्रवाल, कैटॅलागर संस्कृत पाण्डुलिपि, को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने संस्कृत भाषा की पाण्डुलिपियों के कैटलाग भाग–1 का कार्य पूर्ण किया। मैं आभारी हूँ डा0 बलराम शुक्ला, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली का एवं डॉ0 अनीता त्यागी, संस्कृत विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली डा0 अबुसाद इस्लाही, लाइब्रेरी एवं सूचना अधिकारी, श्री ए0 के0 सक्सेना, मिस मोहिनी रानी, श्रीमती बिल्कीस फारुकी, श्री इस्बाह खान, श्री फैसल खान, और इन्जी0 शुजाउद्दीन खान का जिन्होनें इस कठिन कार्य में अपनी सहायता देकर इस कार्य को सम्भव बनाया।

प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन
निदेशक, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

दिनॉक– 15 अगस्त 2014

"My idea is first of all to bring out the gems of spirituality that are stored up in our books (Manuscripts) and in the possession of a few only, hidden as it were, in monasteries and in forests - to bring them out; to bring the knowledge out of them, not only from the hands were it is hidden, but from the still more inaccessible chest, the language in which it is preserved, the incrustation of centuries of Sanskrit words. In one word, I want to make them popular, I want to bring out these ideas and let them be the common property of all, of every man in India, whether he knows the Sanskrit language or not"

- Swami Vivekananda

Introduction

The Rampur Raza Library is one of the important libraries of the World. Besides works relating to different religions, traditions, it is a treasure house of Indo-Islamic learning and arts. This library was founded by Nawab Faizullah Khan in 1774. The Nawabs of Rampur were great patrons of learning and the learned ulema, poets, painters, calligraphers and musicians - enjoyed their patronage. After the independance of India and merger of the state in the union of India, the library was brought under the management of the trust, which was created on 6th April, 1951. Professor Saiyid Nurul Hasan, former Minister of Education Government of India, brought this library under an Act of Parliament on 1st. July, 1975. The Chairman of the board is Honourable Governor of Uttar Pradesh. It is having around 17000 manuscripts in Arabic, Persian, Pashto, Sanskrit, Urdu, Hindi and Turkish languages. Moreover, it possesses a good collection of paintings and palm leaves in various Indian languages. A collection of around 60,000 printed books in various Indian and foreign languages are also available.

There are two landmarks in the Islamic world in the field of Cataloguing - Ibn Nadeem's - *Al-Fehrist* and Haji Khalifa's - *Kashfaz Zanoon.* Raza Library is having rich collection of manuscripts and prepared its catalogues. Ahmed Ali Shauq wrote a book titled - *Kitab Khana-i-Rampur,* which was published in 1998. It shows that first, list of the manuscripts and books was prepared during the period of Nawab Kalbe Ali Khan (1865-87). It seems to be the first proper list of the collection of Raza Library.

In 1888, Maulana Shibli Nomani visited this library and submitted a comprehensive report titled - *"Report Mutaliq Kutub Khana-i-Riyasat Aliya Mustafabad, Rampur"* dated 14th October, 1888. He pointed out the problems of the catalogues of Raza Library. Then he again visited Raza Library on 6th April, 1914. On the basis of this report Nawab Mushtaq Ali Khan (1887-89) directed the staff of the library to prepare the new Catalogue of theManuscripts of the library in the light of the suggestions of Maulana Shibli Nomani. This catalogue bears the following columns.

1. *Nam-i-Fan* (Name of the subject)
2. *Number Shumar* (Number)
3. *Nam-i-Kitab* (Name of the book)
4. *Nam-i-Musannif* (Author's Name)
5. *Zaban* (Language)
6. *Qalmi/Chhapa* (Manuscript or Printed)
7. *Kaifiyat* (Condition)

Following scholars were deputed to work for the cataloguing of manuscripts and published books of Raza Library, Maulana Hafeezullah. Maulana Muhammad Taiyab, Principal *Madarasa-i-Aliya*, Maulana Fazl-i-Haq Rampuri, Maulvi Zahoorul Hasan, Maulvi Majduddin and Maulvi Fasihuz Zaman. This catalogue was having classification of books on the subject.

In 1897 Haifz Ahmed Ali Shauq was appointed in the library and under supervision of Hakim Ajmal Khan, prepared the list of Arabic books based on subject. there are stock registers and the list of books which was prepared during the period of Nawab Hamid Ali Khan (1889-1930) by Munshi Amir Meenai, Munshi Abdur Rahim and Mehi Ali Khan, Munsarim of Raza Library in 1889. This register bears the signature of all the three persons. Now this register itself has become a manuscript. Alphabetic order is followed for the listing of books. It is having 9347 books. But in 1904 on Nawab Hamid Ali Khan's suggestion a new register was prepared. Ahmed Ali Shauq writes that, "During the period Nawab Khuld Ashiyhan (Nawab Kalbe Ali Khan) a register was prepared in three parts." this list was based on alphabetic order but the classification based on subject, was not beief followed. This register is having both the manuscripts and published books together. This catalogue was published in 1902. It is having details about the manuscript. Then he prepared the second and third volumes of the catalogues with more modifications which were published in 1928. These two catalogues are more detailed and descriptive. He had takes inspiration from the Catalogue of manuscripts published by British Museum, London. He himself mentions that this was done by Maulana Muhammad Nabi, Registrar Kutub KJ. have and Maulana Abdullah Amratsari also contributed in this work. But these catalogues have

were having manuscripts and books together. These catalogues were written in Urdu language Maulana Abul Kalam Azad. Former Minister of Education, Government of India, visited Raza Library in 1952 and he also suggested for the compilation of catalogue of manuscripts and printed books.

Hakim Ajmal Khan was appointed as Afsar-i-Ala of Raza Library by Nawab Hamid Ali Khan. Under Hakim Ajmal Khan's patronage the first volume of Arabic manuscripts was compiled and published in 1902. Then Hafiz Ahmed Ali Khan Shauq (b.1862) was appointed as the librarian of Raza Library in 1905. He worked on Cataloguing of the manuscripts of the library. He compiled the second and third volume of Arabic manuscripts, which were published in 1928 and 1929 in urdu. He prepared this catalogue on the pattern of catalogue of manuscripts published by British Museum, London.

In 1932, Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi took over the charge as *Nazim-i-Kuitub Khana*. He was an eminent scholar and took keen interest in the collection of the Library. He took up the task of the compilation of Catalogue of Arabic manuscripts of Raza Library. compiled and published six volumes of Catalogues of Arabic manuscripts. Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi rearranged the collection of the library and separated manuscripts from the published works based on subject. Instead of doing cataloguing in Urdu, Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi compiled the catalogue of Arabic manuscripts in English so that larger section of scholars could be benefitted. Mr. Imtiyaz Ali Khan Arshi, writes in his preface dated 26th November, 1963 that, "This is the first volume of Catalogue of Arabic manuscripts preserved in Raza Library, Rampur." Mr. D.M. Sinha, IAS, Secretary, Raza Library Trust, writes in his introduction dated 27th November, 1963 that, "Since long the need for publishing in English a Descriptive Catalogue of the manuscripts of Raza Library, Rampur, was felt by oriental scholars all over the world. Fortunately the Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs, Government of India, sanctioned a grant for publishing a Catalogue of Arabic and Persian manuscripts. With their aid, which we acknowledge with thanks, we have been able to place before oriental scholars the first volume of this catalogue of Arabic manuscripts. It is proposed to exhaust the Arabic

manuscripts in four volumes, after which the catalogue of Persian manuscripts will be issued on the same pattern." Mr. Sinha highlighting the scholarship of the compiler of this catalogue records in these words, "The compiler of this catalogue, Mr. Imtiyaz Ali Khan Arshi is a scholar of repute in the world of the oriental learning. I am sure, this work of his years labour would be up to the standard lay down by his co-workers both in this country and abroad." Maulana Arshi successfully completed six volumes of the catalogue of Arabic manuscripts in 1977 but his death in 1981, proved to be a setback in the compilation of the descriptive catalogues and since then this work suffered a setback. When I joined as Director of Raza Library on 3rd April, 2012, so I decided to pay special attention for the compilation of the descriptive catalogues of manuscripts. Catalogue of Pashto manuscripts was published by Rampur Raza Library in 2012.Catalogue of Turkish and two volumes of Persian manuscripts published in 2014.

I am highly grateful to Shri Ram Naik, Honourable Governor of Uttar Pradesh a Chairman, Rampur Raza Library for his patronage. I am extremely grateful to Shri Srip Yesso Naik, Minister of Culture, and Mr. Ravinder Singh, Secretary, Ministry of Culture for their financial support. I am thankful to Mrs Juthika Patankar Principal Secretary to Honourable Governor of Uttar Pradesh for her kind help and support. I am equally indebted to Shri V. Srinivas, Joint secretary, Ministry of Culture, Government of India, New Delhi for giving me all the help.

I am highly thankful to Dr. Preeti Agrawal for the compilation of the first volume of the Catalogue of Sanskrit Manuscripts. I am grateful to my colleagues Dr. Abusad Islahi, Library and Information Officer, Mr. Isbah Khan, Mr. A.K. Saxena, Ms. Mohini Rani, Ms. Bilqis Farooqi, Mr. Faisal Khan and Er. Shujauddin Khan whose valuable help and hard work has made this work possible.

Dated: 15th August, 2014

Prof. S.M. Azizuddin Husain
Director, Rampur Raza Library
Ministry of Culture, Government of India.

प्रस्तावना

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी विश्व की ख्याति प्राप्त लाइब्रेरियों में एक प्रतिष्ठित स्थान रखती है। इसकी स्थापना रामपुर के नवाब फैजुल्लाह खाँ द्वारा 1774 ई0 में की गयी। समय में परिवर्तन के कारण नवाब बदलते रहे तथा उनके काल में किताबों एवं पाण्डुलिपियों की संख्या में वृद्धि होती रही। सबसे अधिक वृद्धि नवाब कल्बे अली खां एवं नवाब हामिद अली खां के काल में हुई। नवाब हामिद अली खां की मृत्यु के पश्चात उनके बेटे नवाब रज़ा अली खां (1930–49 ई0) ने लाइब्रेरी की कमान संभाली। उनके काल में भी लाइब्रेरी ने बहुत अधिक उन्नति की। आजादी के बाद रामपुर की रियासत भारतीय संघ में शामिल कर दी गई, 6 अगस्त 1951 से रज़ा लाइब्रेरी एक ट्रस्ट के अन्तर्गत आ गई। इसके बाद पूर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री प्रो0 सैयद नूरुल हसन के प्रयासों से भारत सरकार ने 1 जुलाई 1975 ई0 को राष्ट्रीय महत्त्व की संस्था घोषित किया। इसके बोर्ड के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम श्री राज्यपाल हैं।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में लगभग 17,000 पाण्डुलिपियाँ है जो अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, तुर्की, पश्तो, एवं हिन्दी आदि भाषाओं में हैं। लाइब्रेरी में 60,000 प्रकाशित पुस्तकें हैं तथा 5,000 के आसपास रंगीन कलाकृतियाँ एवं भोजपत्र हैं। यद्यपि यह ओरियन्टल लाइब्रेरी है फिर भी यहाँ संस्कृत की लगभग 600 पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं जोकि आश्चर्य की बात है। ये पाण्डुलिपियाँ रामपुर के नवाबों द्वारा एकत्र की गई, जिससे पता चलता है कि उन्हें भारत एवं भारतीय संस्कृति से बहुत प्रेम था। उनके इसी प्रेम के कारण आज ये भारत की अमूल्य धरोहर लाइब्रेरी में सुरक्षित है, जोकि आने वाली पीढ़ी के लिए एक वरदान है।

अब चूंकि पाण्डुलिपियाँ तो संग्रहित थीं, परन्तु इतनी बड़ी संख्या में उनको पढ़ना सरल नहीं था इसलिए शोधार्थियों को पूर्ण जानकारी प्राप्त कराने हेतु कैटॅलाग की आवश्यकता हुई। सर्वप्रथम मौलाना इम्तियाज़ अली खां अर्शी द्वारा अरबी भाषा के छः कैटलॉग बनाये गये। संस्कृत की पाण्डुलिपियों का भी एक कैटॅलाग डॉ0 फराह द्वारा सन् 2002 में तैयार किया गया था। वह कैटॅलाग 333 पाण्डुलिपियों का है जो कि पूर्ण नहीं है। समय की बदलती हुई परिस्थितियों एवं शोधार्थियों की आवश्यकता को देखते हुए विस्तृत कैटॅलाग बनाने की पुनः आवश्यकता हुई जिसके लिए लाइब्रेरी के

निदेशक प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन द्वारा मेरा चयन किया गया। उन्हीं के निर्देशन में मैंने यह दुरुह कार्य आरम्भ किया जो कि मेरे लिए अत्यन्त कठिन था। यह संस्कृत की पाण्डुलिपियों का प्रथम विस्तृत कैटॅलाग है। भारत की किसी भी लाइब्रेरी में संस्कृत की पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग नहीं है। रामपुर रजा लाइब्रेरी सर्वप्रथम इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस कैटॅलाग के प्रथम भाग में 177 पाण्डुलिपियों का चयन मेरे द्वारा किया गया। सभी पाण्डुलिपियाँ हस्तनिर्मित कागज पर लिखी गयीं हैं। अक्षरों को लिखने के लिए लाल एवं काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अक्षरों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। कागज पुराना होने के कारण एवं कीड़ों द्वारा खाया जाने के कारण पाण्डुलिपियों को पढने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। पाण्डुलिपि में लिखे गये शब्दों को ज्यों का त्यों लिख दिया गया है, उसमें मेरे द्वारा संशोधन नहीं किया गया है। इस कैटॅलाग के अन्तर्गत अलकार शास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरण, रामायण एवं महाभारत तथा ज्योतिष के विषयों की पाण्डुलिपियों को लिया गया है। जिसके लिए इन विषयों के बारे में जान लेना अति आवश्यक है।

अलंकार शास्त्र – **"अलंकरोतीत्यलंकारः"** इस व्युत्पत्ति के अनुसार अलंकृत करने वाले पदार्थों को अलंकार कहते हैं, जिस प्रकार शरीर को अलंकृत करने के कारण कवच–कुण्डल आदि अलंकार कहे जाते हैं, उसी प्रकार काव्य के शब्दार्थ रूपी शरीर को अलंकृत करने वाले अनुप्रास, उपमा आदि अलंकार कहे जाते हैं। अग्निपुराण के अनुसार– काव्य के शोभाकारक, धर्म ही अलंकार हैं– **"काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकरान् प्रचक्षते"।।** आचार्य वामन ने अलंकार को सौन्दर्य का पर्याय मानते हुए अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में कहा है कि सौन्दर्य ही अलंकार है– **सौन्दर्य अलंकारः।।** प्रस्तुत सूची में अलंकार शास्त्र की 8 पाण्डुलिपियाँ हैं।

धर्मशास्त्र – धर्मशास्त्र संस्कृत ग्रन्थों का एक वर्ग है इसमें सभी स्मृतियां सम्मिलित हैं। यह वह शास्त्र है जो हिन्दू धर्म– ज्ञान सम्मिलित किये हुए है। अधिकांश धर्मशास्त्र वेदों की देन हैं इसका साहित्य वृहद है जिसे निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है– सूत्र, स्मृति, निबन्ध और वृत्ति। धर्मशास्त्र में मनुष्य के कर्त्तव्यों को बताया गया है,

धर्मशास्त्र हमें सकारात्मक नज़रिया देते हैं, वे अवसाद नही चेतावनी देते हैं तथा जीवन जीने की कला बताते हैं। कई बार शास्त्रों में बताये गये निषेध देखकर हम दुखी हो जाते हैं परन्तु ऋषि–मुनियों ने जो ज्ञान हमें शास्त्रों के रुप में दिया उन पर चलकर हम सुखद जीवन यापन कर सकते हैं। प्रस्तुत सूची में धर्मशास्त्र की 35 पाण्डुलिपियाँ हैं।

व्याकरण – भाषा और विचारों के तारतम्य को बाँधने वाली विद्या व्याकरण है। व्याकरण वह शास्त्र है जिसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व है और जो अपने आप में सर्वांग पूर्ण है। ऋक्तंत्र के अनुसार व्याकरण शास्त्र के ज्ञान को ब्रह्मा ने बृहस्पति से कहा और वही ज्ञान परम्परा क्रमशः बृहस्पति से इन्द्र, इन्द्र से भारद्वाज, भारद्वाज से ऋषियों एवं ऋषियों से ब्राह्मणों के पास आयी। लौकिक संस्कृत के क्षेत्र में महर्षि पाणिनी को पहला वैयाकरण माना जाता है, उनके द्वारा रचित अष्टाध्यायी एक सर्वांगपूर्ण एवं प्रामाणिक कृति है। "व्याकरण" प्रकृति और प्रत्यय के उपदेशपूर्वक पदो के स्वरूप तथा उसके अर्थनिर्णय के लिए प्रयुक्त होने वाला शास्त्र है। व्याकरण शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है, "पदो की मीमांसा करने वाला शास्त्र"– **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दा अनेनेति व्याकरणम्** अर्थात जिससे हमें साधु शब्दों का ज्ञान होता है, उसे व्याकरण कहते हैं। इसी का दूसरा नाम शब्दानुशासन भी है। व्याकरण की गणना षड्वेदांगों के अन्तर्गत की जाती है तथा इसे वेदपुरुष का मुख कहा जाता है। प्रस्तुत सूची में व्याकरण की 16 पाण्डुलिपियाँ हैं।

रामायण एवं महाभारत – रामायण एवं महाभारत को आख्यान, विकसनशील महाकाव्य, उपजीव्य काव्य तथा आर्षकाव्य कहा गया है। रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं। वेद या वैदिक साहित्य की रचना रामायण से पहले हो चुकी थी, पर लौकिक संस्कृत या लोकभाषा में रची गयी पहली कृति होने से रामायण को आदिकाव्य कहा गया है। रामायण में सात काण्ड हैं जिनके नाम हैं– बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किंधाकाण्ड, सुंदरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड। इसकी श्लोक संख्या 24000 है। महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास हैं। इनका पूरा नाम कृष्णदैपायन वेदव्यास है। महाभारत को अठारह पर्वों में विभाजित किया गया है जिनक नाम हैं– आदिपर्व, सभापर्व, अरण्यपर्व विराटपर्व, उद्योगपर्व,

भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शांतिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रस्थानिकपर्व तथा स्वर्गारोहणपर्व। इन पर्वों में पाण्डवों तथा कौरवों की उत्पत्ति से लेकर स्वर्गारोहण तक का वर्णन है। इन दोनों ग्रन्थों ने न केवल संस्कृत साहित्य को ही, वरन् समस्त भारतीय साहित्य को कई शताब्दियों तक अनुप्राणित किया है। महाभारत अपने विशाल कलेवर में हमारी परम्पराओं और सांस्कृतिक उपलब्धियों का विशद वर्णन प्रस्तुत करता है। महाभारत की इस विविधता तथा विपुलता के कारण ही यह कहावत प्रचलित हो गयी –

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।।

अर्थात् जो महाभारत में है वह अन्यत्र भी मिलेगा, पर जो इसमें नहीं है, वह अन्यत्र भी कहीं नहीं मिलेगा। प्रस्तुत सूची में रामायण एवं महाभारत की 18 पाण्डुलिपियाँ हैं।

ज्योतिष – ज्योतिष को वेदांग का छठा महत्वपूर्ण अंग माना गया है। महर्षि लगध ने इसे "काल–ज्ञानं प्रवक्ष्यामि" के अनुसार कालज्ञान या कालविधानशास्त्र भी कहा है। वस्तुतः इसका प्रधान प्रतिपाद्य विषय काल ही है। ज्योतिषशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार बतायी गयी है– **"रवस्थानां सूर्यादिग्रहनक्षत्रपिण्डानां बोधकमिति ज्योतिषशास्त्रम्"** अर्थात आकाश में स्थित सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह, नक्षत्र जैसे विभिन्न पिण्डों की गति, स्थिति, स्वरुप, प्रभाव आदि का सम्यक् परिज्ञान जिससे होता है वह ज्योतिष शास्त्र कहलाता है। ज्योतिष को वेदपुरुष का नेत्र स्वीकार किया गया है। ज्योतिषामयंन चक्षुः।। संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों के फलस्वरुप मनुष्य को इस जीवन में कब, कहाँ, किस प्रकार तथा क्या–क्या प्राप्त हो सकेगा, उन समस्त विषयों को जानने का एकमात्र विश्वास योग्य साधन ज्योतिष शास्त्र ही है। प्रस्तुत सूची में ज्योतिष की 100 पाण्डुलिपियाँ हैं।

इस कैटलॉग को पूर्ण करने में मुझे जिन–जिन महानुभावों का आशीर्वाद एवं सहयोग मिला, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझती हूँ। सर्वप्रथम मैं अपने गुरु जी डॉ0 माधवराम यादव एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राजेन्द्र प्रसाद डिग्री कालेज, मीरगंज, बरेली के प्रति नतमस्तक हूँ, जिन्होंने मुझ अल्पमति को अपनी शिष्या बनाया एवं ज्ञान दिया। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन जी का आभार व्यक्त करने के लिए

तो मेरे पास शब्द ही नही हैं क्योंकि उन्हीं के प्रेरणादायक निर्देशन एवं पूर्ण सहयोग से ही यह कार्य पूर्ण हुआ है। मैं डॉ0 बलराम शुक्ला, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने व्यस्तता के बावजूद भी इस कैटलॉग का निरीक्षण किया एवं मुझे पूर्ण सहयोग दिया, उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था। मैं डॉ0 अनीता त्यागी, संस्कृत विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली एवं डॉ0 शरद अरोरा का भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मेरी समय समय पर सहायता की।

मैं लाइब्रेरी के पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ0 अबुसाद इस्लाही जी का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय समय पर पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध करायी और उचित मार्ग दर्शन भी किया। मैं लाइब्रेरी के अपने दूसरे साथी डॉ0 मो0 इरशाद नदवी नौगानवी, सै0 नवेद कैसर शाह, श्रीमती नाजमा बी, श्रीमती साजिदा शेरवानी, डॉ0 तबस्सुम साबिर, श्री इस्बाह खान, श्री तौसीफ अहमद एवं श्री राजेश कुमार का भी धन्यवाद व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य को करने में यथासमय सहंयोग दिया।

मैं अपने पूज्य पिताजी श्री चन्द्रसेन अग्रवाल एवं माताजी श्रीमती सुधा अग्रवाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनके सतत् आशीर्वाद, स्नेह, प्रेरणा और निर्देशन के कारण ही यह कार्य सम्भव हो सका है। मैं अपने पति श्री भारत अग्रवाल जी की भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने में मुझे पर्याप्त समय व सहयोग दिया।

यद्यपि इस कैटॅलाग को बनाने में एवं प्रूफादि शोधन करने में मेरे द्वारा निश्चय ही प्रमाद रहित प्रयास किया गया है, फिर भी यदि कहीं अशुद्धि रह गयी हो तो गलती करना मानव स्वभाव मानकर विद्वान पाठक मुझे क्षमा करें एवं अपने सुझाव प्रेषित करें, जिससे अगले प्रकाशन में इसे सही किया जा सके।

सधन्यवाद !

16.08.2014

डॉ0 प्रीति अग्रवाल
कैटॅलागर संस्कृत
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

प्राक्कथन

रामपुर शहर के बीचों बीच विस्तृत अहाते में स्थित नवाब के महल में प्रवेश करते ही हामिद मंजिल के बाहर शालिपट्ट पर अरबी की कुर्आनी आयत- **"रब्बना ज़दि्नी इल्मन्"** के साथ–साथ संस्कृत का समानार्थक ध्येयवाक्य -- **"ज्ञानं वर्धयतु प्रभुः"** (परमेश्वर मेरे ज्ञान को बढ़ाये) देखकर प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य होता है। पुस्तकालय के अन्दर जाकर ग्रन्थों के संग्रह को देखकर भी इसी उदारता के दर्शन होते हैं। यद्यपि रामपुर रज़ा पुस्तकालय अपने अरबी तथा फारसी के समृद्ध तथा अद्भुत संग्रह के कारण विश्व प्रसिद्ध है तथापि इसमें तुर्की, पश्तो आदि के साथ संस्कृत तथा हिन्दी की पाण्डुलिपियाँ भी विद्यमान हैं। यह तथ्य रामपुर के नवाबों की पक्षपातरहित ज्ञानप्रियता का बड़ा उदाहरण है।

1774 ई0 में फैजुल्लाह खां से लेकर 1949 में रज़ा अली खां तक 200 से भी अधिक वर्षों में निरन्तर समृद्ध होते है इस ग्रन्थालय को 1974 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय महत्त्व समझा तथा अब यह संस्कृत मंत्रालय के अधीन है।

पुस्तकालय में लगभग 600 संस्कृत पाण्डुलिपियाँ है, जिनमें अनेकानेक अप्रकाशित होने के कारण बड़ी महत्वपूर्ण हैं। अनके वर्षों तथा अनेक स्तरों पर पुस्तकालय में इनका आगमन हुआ। इनमें से अनेक पाण्डुलिपियों रामपुर या मुरादाबाद के स्थानीय लेखकों के द्वारा लिखी गयी हैं तथा पण्डितों के घरों से पुस्तकालय को दी गई हैं या बेची गयी हैं। इस प्रकार स्थानीय संस्कृत पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इस पुस्तकालय का योगदान महत्वपूर्ण है।

यहाँ की संस्कृत पाण्डुलिपियों के विषयों में पर्याप्त विविधता है। इनमें अंलकार शास्त्र, धर्मशास्त्र, व्याकरण, रामायण एवं महाभारत तथा ज्योतिष आदि अनेकानेक विषय सम्मिलित हैं। इन पाण्डुलिपियों में एक बड़ी संख्या नित्य पाठ की पुस्तिकाओं, पंचागों तथा पारायण हेतु प्रयोग की जाने वाले पुराणों (विशेषतः श्रीमद्भागवत महापुराण) की है। इसके अतिरिक्त अति महत्वपूर्ण तथा अधुनावधि अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ यहाँ के संग्रह को महत्वपूर्ण बनाती हैं। इनकी विशेषताओं के निदर्शन के

लिये कुछ पाण्डुलिपियों का परिचय आगे दिया जा रहा है। कालिदास कृत **रघुवंश** की जनार्दन भट्ट की अप्रकाशित टीका शिशुप्रबोधिनी अपूर्ण होने के बावजूद प्राचीन तथा महत्त्व की है। महाभारत के प्रसिद्ध **विष्णुसहस्रनाम** में प्राप्त भगवान के 1000 नामों का व्युत्पत्त्यात्मक श्लोकबद्ध व्याख्या एक रुचिकर पाण्डुलिपि है, जिसके कर्ता कोई सन्यासी हैं। इसका नाम **विष्णुनामप्रकाश** है। टीकाराम शर्मा नामक किसी आधुनिक स्थानीय नैयायिक द्वारा लिखित ग्रन्थ तर्कसुधाधारा की पाण्डुलिपि यहाँ विद्यमान है। इस पर ग्रन्थकार की धारा नामक स्वोपज्ञ टीका भी है। संगतिवाद न्यायशास्त्र के सम्बद्ध तत्व से सम्बन्धित पाण्डुलिपि है, केवल अर्थालंकारों पर आधारित लघुकाय, परन्तु दुर्लभ पाण्डुलिपि **अर्थालंकारमंजरी** भी यहाँ स्थित है। **अंलकारकुलप्रदीप** पाण्डुलिपि अंलकारों का सरल रीति से विवेचना करती है इसके लेखक काशी निवासी निर्मल भट्ट नामक विद्वान हैं। ज्योतिष के द्वारा व्यक्ति के आयु निर्णय तथा दीर्घायु कारक उपायों से समन्वित 100 योगों का वर्णन करने वाला ग्रन्थ **योगशतकम्** भी यहाँ पाण्डुलिपि के रूप में विद्यमान है। **नक्षत्ररोगावली** में नक्षत्रों के भिन्न–भिन्न योगों को रोगों के कारक के रूप में वर्णित किया गया है तथा तंत्र एवं धर्मशास्त्र पर आधारित उनके उपचार का वर्णन भी किया गया है। ज्योतिष के ताजिक क्षेत्र से समबद्ध **ताजिकाभरण** तथा **प्रश्नवैष्णव** ग्रन्थ भी पाण्डुलिपि के रुप में विद्यमान हैं। **वेदान्तसंज्ञाप्रकाश** में वेदान्त शास्त्र से सम्बन्धित 44 पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या है। **भुवनेश्वरी पद्धति** तथा **भुवनेश्वरी विधान** भुवनेश्वरी देवी की तन्त्रोचित सपर्या से सम्बन्धित ग्रन्थ है। श्रीमद्भागवत के प्रथम श्लोक की 100 मूलकथापरक व्याख्याओं की अद्भुत पाण्डुलिपि तथा पण्डितराज जगन्नाथ की **गंगालहरी** संस्कृत टीका तथा अन्यान्य पाण्डुलिपियाँ उल्लेखनीय है। इन पाण्डुलिपियों में से अनेक में सुन्दर चित्रकारियाँ भी प्राप्त होती है, जिनका चित्रकलादि की दृष्टि से अध्ययन हो सकता है।

इस प्रकार के महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों से समन्वित ग्रन्थराशि का सूचीकरण विद्वत् जगत के लिए बहुत आवश्यक था। इस दिशा में सबसे पहला कार्य सन् 2002 में हुआ। पुस्तकालय की 333 संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूचना के साथ एक सूची आचार्य विद्यानिवास मिश्र की प्रस्तावना के साथ प्रकाश में आयी। प्राथमिक प्रयास होने के नाते यह कार्य महत्वपूर्ण तो था, परन्तु इसमें अपूर्णता के साथ अनेक सूचनात्मक दोष भी विद्यमान थे, जिसके नाते इसका निरापद रुप में शोध हेतु प्रयोग नही किया जा सकता

था। इस सत्य का ज्ञान मुझे तब हुआ जब पुस्तकालय के वर्तमान अध्यवसायी निदेशक प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन साहब ने 2012 में मुझे प्रकाशन योग्य पाण्डुलिपियों का निरीक्षण करके एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। सूची का निरीक्षण करते हुए मैं उसकी सीमाओं से अवगत हुआ। इसमें अनेक तथ्यात्मक गलतियाँ भी थी जैसे **उपदेशसाहस्री** की अपूर्ण पाण्डुलिपि को **अपोहवाद** के नाम से सूचीकृत कर दिया गया था। अनेक पाण्डुलिपियों की सूची संख्या की अशुद्ध सूचना दी गई थी, जो शोधकर्ताओं के लिए असुविधा उत्पन्न करने वाली थी। इसके अतिरिक्त इस सूची में प्रूफ की पर्याप्त अशुद्धियाँ तथा सम्पादन की अपूर्णताऐं थी। इस सूची के अनुसार इस पुस्तक में 333 पाण्डुलिपियों को सम्मिलित किया गया है, जबकि पुस्तकालय में संस्कृत की 600 से अधिक पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं।

महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों पर रिपोर्ट देते हुए मैंने पुस्तकालय को सुझाव दिया कि समस्त पाण्डुलिपियों को नये सिरे से सूचीबद्ध किया जाये। इसे स्वीकार करते हुए पुस्तकालय ने पुनः सूचीकरण का कार्य प्रारम्भ कराया। जिसका प्रमाण प्रस्तुत सूचीग्रन्थ के प्रथम खण्ड के रुप में आपके सामने हैं। प्रथम भाग में 177 पाण्डुलिपियों का यथोलब्ध परिपूर्ण सूचना के साथ विषयवार सूचीकरण किया गया है। यह कार्य मेरे निर्देशन में डॉ0 प्रीति अग्रवाल ने अनेक समस्याओं के आने के बावजूद बड़े ही श्रमपूर्वक किया है तथा आने वाले खण्डों के प्रकाशन के लिये अभी भी प्रयासरत हैं। इसके लिए इन्हें भूरिशः साधुवाद प्रदान किया जाता है तथा अग्रिम खण्डों के यथाशीघ्र प्रकाशन हेतु पर्याप्त शुभकामनाऐं दी जाती हैं। यह सारा कार्य संस्कृत के राष्ट्रीय महत्त्व को समझने वाले पुस्तकालय के निदेशक इतिहासविद् प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन के अध्यवसाय तथा लगनशीलता का परिणाम है। उन्हें तथा पुस्तकालयाध्यक्ष सहित अन्यान्य पुस्तकालीय सहायकों को उनके यथास्थान सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुऐ अगले खण्डों के शीघ्र प्रकाशन के प्रति विश्वास प्रकट करता हूँ।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी
17.08.2014

डॉ0 बलराम शुक्ल
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली – 110007

Index of Works

Alaṅkār Śāstra

अलंकार शास्त्र

Dharma Śāstra

धर्म शास्त्र

Grammar
व्याकरण

Rāmāyaṇa Evam Mahābhārata

रामायण एवं महाभारत

Jyotiṣa

ज्योतिष

Alaṅkār Śāstra

अलंकार शास्त्र

Form No.: 1

Manuscript No.: 15079

Subject: Alaṅkār Śāstra

Accession No.: 15079

Title of Work: Arthālaṅkāramañjarī

Title of Work in Sanskrit: अर्थालंकारमंजरी

Name of Author: Niramala Bhaṭṭa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Arthālaṅkāramañjarī has been composed by Nirmala Bhaṭṭa the son of Vallabha Bhaṭṭa. The MS starts from folio 1b. Folio no. 1a has a different paragraph.

Beginning: श्री गणेशाय नमः। कपोलालंबिरोलंबबिंबं कोलाहलाकुलं।

End: अन्ये वैकल्पिकाः सर्वे विज्ञेयाः किल तद्भवाः।।

Script: Devanāgarī

Size: 9.5 x 15.5 cm.

Lines: 8 to 10

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1795

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	10
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 2	**Manuscript No.:** 15076
Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	15076
Title of Work:	Alaṅkārkul Pradeep
Title of Work in Sanskrit:	अंलकारकुल प्रदीप
Name of Author:	Ācārya Viśveśvara
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Alaṅkārkul Pradeep is composed by Ācārya Viśveśvara. He described Alankār Śāstra in it. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ नमः सकलगोपवधूनां स्वात्मनिप्रवणित प्रणयाय। धर्मवासरगमावसरोद्यव्दारिवाह रूचिराय चिराय।
End:	विभागाय प्रयासस्पृशां पत्राणामवलोकनेन विगतप्रायानि शाखायतां.............।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 28.5 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	26
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 3	**Manuscript No.:** 15
Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	22683
Title of Work:	Kuvalyānanda
Title of Work in Sanskrit:	कुवलयानन्द
Name of Author:	Appayadīkṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kuvalyānanda is a work of Alaṅkār Śāstra. It is a famous commentary on Jayadeva's Candraloka. The author Appyadīksita was the son of Śrī Rang Rajādhwari according to the MS.
Beginning:	श्री गणपतये नमः।। अमरीकबरीभार भ्रमरीमुखरीकृंत।। दूरीकरोतु दुरितंगौरीचरणपंकजम्। १।
End:	चंद्रालोको विजयते शारदागमसंभवः सद्य कुवलयानंदो यत्प्रसादाद भूदयं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 33.4 cm. (Different)
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1814

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	64
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 4	**Manuscript No.:** 15078
Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	15078
Title of Work:	Rasamañjarī
Title of Work in Sanskrit:	रसमंजरी
Name of Author:	Śrī Bhānudatta Miśra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rasamañjarī is composed by Śrī Bhānudatta Miśra the son of Ganeśwara. He described the classification of heroines of Indian aesthetics.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। आत्मीयं चरणं दधाति पुरतो निम्नोन्नतायां भुवि स्वीयेनैव करेण कर्षति तरोः पुष्पं श्रमाशंकया।
End:	पद्येन स्वकृतेन तेन कविना श्री भानुना योजिता वाग्देवीश्रुतिपरिजातकुसुमस्पर्द्धाकरी मंजरी।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 28 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1908 Śake 1773
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	18
Condition:	Worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 5	**Manuscript No.:** 11
Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	226851
Title of Work:	Vidagdhamukhamaṇḍana
Title of Work in Sanskrit:	विदग्धमुखमण्डन
Name of Author:	Dharmadāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vidagdhamukhamaṇḍana is a work of Alaṅkar Śāstra. The MS contains four chapters named Parichhed (परिच्छेद). Last folio of the MS is blank. First two folios have worm eaten from left side. The author gives diagrams also in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। सिद्धौषधानि भवदुःख महागदानां पुण्यात्मना परम कर्णरसायनानि ।।
End:	करोतिकस्य न स्वान्तमेकान्त मदोत्सवं ।।७३ ।। च्युतदत्ताक्षर जातिः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.8 x 26.5 cm. (Different)
Lines:	7 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1791

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	26
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 6

Manuscript No.: 13

Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	22691
Title of Work:	Vidagdhamukhamaṇḍana
Title of Work in Sanskrit:	विदग्धमुखमण्डन
Name of Author:	Dharmadāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vidagdhamukhamaṇḍana is a work of Alaṅkār Śāstra. The MS contains four chapters named Parichhed (परिच्छेद). The author gives diagrams also in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः श्री गोकुलेशपद पद्मन धुव्रतेन ताराभिधेन कविना शिवराज धान्यं. .... ।
End:	पूर्ण चंद्रमुखो रम्या कामिनी निर्मलावंरा करोति कस्य न स्वांतमेंकान्त्तं मदनातुरं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 32.2 cm.
Lines:	7 to 9
Copier's Name:	Gaṅgādatta Pāṇḍey
Age:	Saṃvat 1896
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	22
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No. 7

Manuscript No.: 15073

Subject: Alaṅkār Śāstra

Accession No.: 15073

Title of Work: Vṛttaratnākara

Title of Work in Sanskrit: वृत्तरत्नाकर

Name of Author: Kedār Bhaṭṭa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Vṛttaratnākara is a metrical treatise on prosody. It is divided into six chapters called Adhayāyas composed by Kedār Bhaṭṭa.

Beginning: श्री गणेशाय नम:। सुख संतान सिध्यर्थं नत्वा ब्रह्माच्युतार्चितम्।

End: छन्दस्तेनाभिरामं प्रविरचितं इदंवृत्तरत्नाकराख्यम्।

Script: Devanāgarī

Size: 13.8 x 29.8 cm.

Lines: 10 to 12

Copier's Name: Durgā Datta Miśra

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 8	**Manuscript No.:** 15259
Subject:	Alaṅkār Śāstra
Accession No.:	15259
Title of Work:	Śrutabodha
Title of Work in Sanskrit:	श्रुतबोध
Name of Author:	Kālīdāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrutabodha is a work of Prosody ascribed to Kālīdāsa. In the MS the description of different verse has been given.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। छन्दसां लक्षणं येन श्रुतमात्रेण बुध्यते तदहं सं प्रवक्ष्यामि श्रतिबोधमविस्तरात्।
End:	कवींद्रैः सुदति सुगादिता स्रग्धरासाप्रसिद्धा ४१।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 24.4 cm.
Lines:	8 to 9
Copier's Name:	Badrīdāsa
Age:	Saṃvat 1921
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	5
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Dharma Śāstra

धर्म शास्त्र

Form No.: 9	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	24841
Title of Work:	Aṭhaīsa Nāma
Title of Work in Sanskrit:	अठाईस नाम
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Aṭhaīsa Nāma is a work of Dharma Śāstra. By asking Yuḍihiṣṭhira Śrī Krisṇa told him His twenty eight names. Chanting these names the people has left from his sins.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। किंतु नाम सहस्त्राणि जप्ते च पुनः पुनः........... ।
End:	मध्याने जपते नित्यं सर्वपापै प्रमुच्यते ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	2 (81b to 82b)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 10	**Manuscript No.:** 15342
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15342
Title of Work:	Ākāśe Dīpadāna
Title of Work in Sanskrit:	आकाशे दीपदान
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ākāśe Dīpadāna is a work of Dharma Śāstra. All folios are very difficult to read. The MS is in brittle condition.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथाकाशे दीपदान मंत्रः अद्येहः अमुक राशे अमुक शर्माहं श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तये............ ।
End:	चंद्रमाः सोमो राजायश्नून् हति सुरभी मॉँस्तथा।।
Script:	Devanagari
Size:	11 x 24.5 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of first page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 11	**Manuscript No.:** 15252
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15252
Title of Work:	Ācāra Pradīpa
Title of Work in Sanskrit:	आचार प्रदीप
Name of Author:	Nāgadeva Upādhayāya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Many Vidhis have been given in the MS like- धर्म प्रंशसा विधि, आत्म चिन्तन विधि, यज्ञोपवीत विधि, प्रणव विधि, प्राणायाम विधि, आह्निके प्राणायाम विधि आदि। The last folio of the MS has bound inverse.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः चंचन्नास पुटं स्फुराभिनयन व्यग्राग्र दाहति......... ।
End:	शास्त्रातः कृतशौचानमापदौ नैव विद्यते।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 29 cm. (Different)
Lines:	11 to 14
Copier's Name:	Parmānanada
Age:	Śake 1755
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	49
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.61 According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 12	**Manuscript No.:** 15303
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15303
Title of Work:	Ṛṣi Pañcamī Māhātmya Kathā
Title of Work in Sanskrit:	ऋषि पंचमी माहात्म्य कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ṛṣi Pañcamī Māhātmya Kathā has been taken from Bhaviṣyottara Purāṇa. There is a saṃvād (dialogue) between Śrī Kriṣṇa and Arjuna. By asking Yuḍhiṣthira, Śrī Kriṣṇa told him the Ṛṣi Pañcamī Māhātmya Kathā. According to the MS this Vrata has done in the Month of Bhādra Śukla Pañcamī.
Beginning:	श्री गणेशायः नमः।। युधिष्टर उवाच।। कृतांजलि पुटो भूत्वा राजा पृछति केशवं ऋषीणां पंचमीनाम कथयस्वममप्रभो १।।
End:	अचिरेण च पुत्रणीं मतानांचत्युयान्नरः सर्वसंपतिसंपन्नं ऋषिणां च व्रतं कृते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.8 x 17.1 cm.
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Go od
No. of Folios:	4
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 13	**Manuscript No.:** 15250
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15250
Title of Work:	Karma Vipāka
Title of Work in Sanskrit:	कर्म विपाक
Name of Author:	Śaṁkar Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Karma Vipāka is a work of Dharma Śāstra. The MS is incomplete. The author Śaṁkar Bhaṭṭa was the son of Nilakaṇṭha Bhaṭṭa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः दिवाकरपदद्वंद्व प्रदायकं त्रैलोक्य तमसोनाशकर्त्तृतत्प्रणामाम्यहं १।।
End:	इति सर्व ज्वरहरं कुंभदानं अथर्सज्व।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 31.3 cm.
Lines:	4 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	82
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 14	**Manuscript No.:** 15270
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15270
Title of Work:	Karmavipākasaṃhitā
Title of Work in Sanskrit:	कर्मविपाकसंहिता
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS has been taken from Bṛahamāṇda Purāṇa (ब्रह्माण्ड पुराण). The MS contains many chapters. Some folios are difficult to read.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। अथ कर्म विपाक संहिताया प्रछक विधिः।।
End:	काक वंध्या लभेत् पुत्रं मत..............त्सास पुत्रिणी।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 25.3 cm.
Lines:	9 to 15
Copier's Name:	Buddhasena
Age:	Saṃvat 1909 Śake 1774
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	53
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 16	**Manuscript No.:** 56
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	20175
Title of Work:	Kārtāvīryadīpa
Title of Work in Sanskrit:	कार्तावीर्यदीप
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kārtāvīryadīpa is a work of Dharma Śastra. Folio no.1 and 2 are missing from the MS so it starts from folio no.3. The MS is incomplete.
Beginning:	.............प्नोति पुत्रान्यौत्रान् धनंजयः यथाकथंचिद्योगेहे नित्यं दीपं समाचरेत्.................।
End:	पुनराज्यमादायाग्नी षोमाभ्यां स्वा........................ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 22 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	12
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 17	**Manuscript No.:** 15268
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15268
Title of Work:	Kāyasthopatti Citragupta Kathā
Title of Work in Sanskrit:	**कायस्थोत्पत्ति चित्रगुप्त कथा**
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The work is belonging to Uttara Khaṇḍa of Padma Purāṇa. In the MS utpatti of Kāyastha is given. All folios of the MS are bound inverse.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः दत्तात्रेय उवाच त्रिकालज्ञं महाप्राज्ञं पुलस्त्यं मुनि पुंगवं पपृछमुनि संगम्य भीष्म शास्त्र भृतांवरः १।।
End:	प्राणांते यत्पदं यांति तत्र गंछति ताप सः ८४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 23.5 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Bhawānī Prasāda Tiwārī
Age:	Saṃvat 1866 Śake 1731
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 18	**Manuscript No.:** 15282
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15282
Title of Work:	Kuśakaṇḍikā
Title of Work in Sanskrit:	कुशकण्डिका
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kuśakaṇḍikā is a work of Dharma Śāstra. All folios are difficult to read. Some text is missing due to worm eaten.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। अथ कुशकण्डिका लिख्यते।।
End:	ॐ अन्नात्परि।। ॐ सन्नो देवी।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.3 x 19.5 cm. (Different)
Lines:	6 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1855
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 19	**Manuscript No.:** 15245
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15245
Title of Work:	Kedārkalpa
Title of Work in Sanskrit:	केदारकल्प
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kedārkalpa is a work of Dharma Śāstra. In the MS three folios are missing from beginning. The MS contains 2 to 9 patals and 1 to 23 patals. Every patal has its different name according to the matter. The description of Kedārkalpa has given in it.
Beginning:	............इति श्री केदार कल्पे ईश्वर देवी संवादे द्वितीय पटलः।। ईश्वर उवाच।। अतः परं प्रवक्ष्यामि केदारस्य तु यत्फल।।
End:	सर्वपाप विनिर्मुक्तो शिवसायुज्यमाप्नुयात्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 33 cm.
Lines:	11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1257
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	38
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 20	**Manuscript No.:** 15267
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15267
Title of Work:	Gaṅgā Māhātmaya
Title of Work in Sanskrit:	गंगा माहात्म्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the description of Gaṅgā has been given. The work has been taken from Rāmāyaṇa, Mahābhārata and different Purāṇas. Folio no.17a is not readable.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नत्वां तात पदाज्जरेण निचयांस्तत्वाववोध क्षमां सूरी भूरी मतिश्रशास्त्र निपुणान्दृष्टा पुराणान्यथ।।
End:	अभक्तानां च पापानां ते वा विष्णं प्रकुर्वते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 27.5 cm.
Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	24
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 21	**Manuscript No.:** 15265
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15265
Title of Work:	Gayā Māhātmaya
Title of Work in Sanskrit:	गया माहात्म्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS has been taken from Vāyu Purāṇ Sweta Vārāha Kalpa (वायु पुराण श्वेत वाराह कल्प). The MS contains eight adhayāyas.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः श्री गदाधराय नमः सूत उवाच सौनकाद्यैर्महाभागै देवर्षि सह नारदः सनत्कुमारं पप्रच्छ.......... ।।
End:	पुण्यां कथां या निवेद्यभत्तया स्वमाश्रमं पुण्य वनैरुपेतं ४ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 32.8 cm.
Lines:	9 to 13
Copier's Name:	Mādhava
Age:	Saṃvat 1899 Śake 1764
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	25
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 22	**Manuscript No.:** 15297
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15297
Title of Work:	Gokarṇanirūpaṇa
Title of Work in Sanskrit:	गोकर्णनिरुपण
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gokarṇanirūpaṇa is a work of Dharma Śāstra. Folio no. 3 is missing from the MS and folio no. 6 has bound in place of 3.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। यं प्रवजंतमनुपेतमपेत कृत्य दैपायनो विरहकातर आजुहाव............।
End:	श्राद्धे प्रयुक्तं पितृ तर्पणेन नित्यं सुपाठाहपुनर्भवं भवेत्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.7 x 20.7 cm. (Different)
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 23	**Manuscript No.:** 15262
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15262
Title of Work:	Cāṇakya Nītiśāstra
Title of Work in Sanskrit:	चाणक्य नीतिशास्त्र
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	No
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nīti Ślok as have been given in the MS. The MS is incomplete because colophon has not given. The paper of the MS is very thin.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः नीतिशास्त्रं प्रवक्ष्यामि चाणिक्येन सुभाषितं येन विज्ञान मात्रेण वुद्धि विंकसते नृणां १।।
End:	भूरिव्याया प्रचुर नित्य धनागमा च वारांगने वनृपनीतिरनेकरुपाः ८५ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 20 cm.
Lines:	7 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	35
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 24	**Manuscript No.:** 15243
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15243
Title of Work:	Nirṇayāmṛta
Title of Work in Sanskrit:	निर्णयामृत
Name of Author:	Suryasena Mahī Mahendra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains many Prakarṇa about Śrāddh, Karma, Tithi, Vrata, Phala etc. Every Prakarṇa has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। कारणमेकं जगतां वारणमास्येन वारणं विपंदां।।
End:	गोपीनारायणेनेदं निर्म्मितं निर्णयामृतम्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 28.5 cm.
Lines:	11 to 19
Copier's Name:	Giridhārī Lāla Miśra
Age:	Saṃvat 1911
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	114
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 25	**Manuscript No.:** 15266
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15266
Title of Work:	Naimiṣāraṇya Māhātmaya
Title of Work in Sanskrit:	नैमिषारण्य माहात्म्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Naimiṣāraṇya Māhātmaya is a work of Dharma Śāstra. The work has been taken from Skāṇda Purāṇa Umā Māheśwar Saṃvād. All folios are difficult to read. Folio no. 5 is bound inverse.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नम.।। ॐ अत्यंत ध्यान शक्तै रमरबुधगणैश्शेवितोत्यंत भाग्यैः।।
End:	य इदं च कथां पुण्यं स्वर्गे लोकं सगच्छति।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 26 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1921 Śake 1786
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	35
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 26	**Manuscript No.:** 24
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15195
Title of Work:	Pākhaṇḍacapeṭikā
Title of Work in Sanskrit:	पाखण्डचपेटिका
Name of Author:	Vijayrāmācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is related to Dharma Śāstra chiefly written to repute transgression silently introducing in Hindu Dharma.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः विश्वं चरीकर्त्ति विभुः स्वलीलया तथाऽऽभर्त्यखिलं सनातनः........... ।
End:	इति मदीयं साहसिकत्वं गुणग्रह्यैस्तरिभिरंगी कर्त्तव्यं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.2 x 23.6 cm.
Lines:	10
Copier's Name:	Deva Śaṁkara Dwedī
Age:	Saṃvat 1876 Śake 1741
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been by National archives Govt. of India in 18.5.61. A ccording to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 27	**Manuscript No.:** 15344
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15344
Title of Work:	Pothī Yajñopavīta
Title of Work in Sanskrit:	पोथी यज्ञोपवीत
Name of Author:	Ganeśa Dutta
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the pattern of Yajñopavīta has been given. According to the MS Brāhmins Yajñopavita has done in eight years old and Kṣhatriyas in 10 years old and the Vaiśhayas in 11 years old.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अष्टवर्षे ब्राह्मणमुपनयेत गर्भाष्टमे वा एकाद शवर्षे राज्ञन्य द्वाद शवर्षे वैश्यं अथोपनयनमुच्येत।
End:	सर्वेषामित्रामिवति स्रोरात्री व्रतं चरेत।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 20.2 cm.
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Tīkārāma
Age:	Saṃvat 1869
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Copier self
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 28	**Manuscript No.:** 15251
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15251
Title of Work:	Pārāśara Smaṛti
Title of Work in Sanskrit:	पाराशर स्मृति
Name of Author:	Ṛṣi Pārāśara
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Pārāśara Smaṛti is a very famous work of Ṛṣi Pārāśara. The MS contains 13 Adhayāyas.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ पाराशरस्मृतिर्लिख्यते अथातो हिमशैलाग्ने देवदारु वनालये व्यासमेकाग्रमासीनम पृछन्नषयः पुरां १ ।।
End:	गवां चैवानुगमनं सर्वपाप प्रणाशनम् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 30.3 cm.
Lines:	11 to 13
Copier's Name:	Durgādatta Miśra
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Dedicated to Ṛṣi Vyāsa.
Quality of Paper:	Not so good

No. of Folios:	20
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 29	**Manuscript No.:** 15298
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15298
Title of Work:	Badrī Māhātmya
Title of Work in Sanskrit:	बद्री माहात्म्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Badrī Māhātmya has been taken from Sanatkumāra Saṃhitā. The MS contains two Adhayāyas. All folios are ink stained. So they are difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः वन्दे श्री नारसिंग..............क्रोड केदार गंगा मारकन्डे................ ।
End:	अर्चये च सुयुख्याध्येः संगतिं वेती संकरम्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 20.6 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Mahānanda
Age:	Saṃvat 1855
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 30	**Manuscript No.:** 15248
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15248
Title of Work:	Brāhmaṇa Sarvasva
Title of Work in Sanskrit:	ब्राह्मण सर्वस्व
Name of Author:	Halāyudha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Brāhmaṇa Sarvasva is a work of Dharma Śāstra composed by Halāyudha. Folio no. 22a and 32b are coloured with red colour.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः दीपवद्योतयतियो भूर्भुवः स्वर्जगत्रयम् सवितुस्तं वयं भर्ग्गमपवर्ग्गकरं नुमः १ ।।
End:	ॐ भवतन्न समनेसो सचेत साचरे यसौ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 30.7 cm.
Lines:	10 to 17
Copier's Name:	Talfīrāma and Yamunādāsa
Age:	Śake 1744
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	137
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 31	**Manuscript No.:** 15261
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15261
Title of Work:	Mantra Mahodadhi
Title of Work in Sanskrit:	मंत्र महोदधि
Name of Author:	Mahidhar
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS many mantras of different Gods and Goddesses have been given. The MS contains 25 chapters called Tarangas. Folio no. 49a has only 5 lines.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः नत्वा लक्ष्मीपतिं देवं स्वीये मंत्र महोदधौ नावं विरचये रम्यां तरणाय गुणैर्युतां.....।
End:	लक्ष्मी सिंहो मणि कर्णिकार्कः काशी सदुर्गा ददतां शिवं मे।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 34 cm.
Lines:	11 to 14 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1775
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	63
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 32	**Manuscript No.:** 15278
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15278
Title of Work:	Mantra Mahodadhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	मन्त्र महोदधिः
Name of Author:	Mahīdhar
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS many mantras of different Gods and Goddess have been given. The MS contains twenty five chapters called Taranga. Mostly folios are difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नत्वा लक्ष्मी पतिं देवीं स्वीये मंत्र महोदधौ।।
End:	ग्रंथ निस्पत्ति स्थानं काशी स्थान देवान्स्मरति।। १३१।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 31.5 cm.
Lines:	11 to 14
Copier's Name:	Paṇḍita Dayārāma Tiwārī
Age:	Saṃvat 1812
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	79
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 33	**Manuscript No.:** 15246
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15246
Title of Work:	Yajñavalkyasmṛati
Title of Work in Sanskrit:	याज्ञवल्क्यस्मृति
Name of Author:	Ṛśī Yajñavalkya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Yajñavalkyasmṛati is a very famous work of Ṛśī Yajñavalkya. The MS contains 1 to 3 Adhayāyas. There are many Prakaraṇa in every Adhayāyas. Every Prakaraṇa has its different name. The last folio of the MS has bound inverse by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं संपूज्य मुनयोऽब्रुवन् वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषनः १।।
End:	एवमस्त्वित्ति हो वाचनमस्कृत्य स्वयं भुवे ७२ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 30.8 cm.
Lines:	9 to 13
Copier's Name:	Talfī
Age:	Śake 1877
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	45
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 34	**Manuscript No.:** 15260
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15260
Title of Work:	Vratotsava Vidhānam
Title of Work in Sanskrit:	व्रतोत्सव विधानम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vratotsava Vidhānam is a work of Dhama Śāstra. The MS is incomplete from beginning and the last. Different types of Vrat Vidhana have given in the MS. First five folios are missing.
Beginning:	...............त् ।। तत्र संकल्प मंत्रः ।। उपोष्ये नवंमीत्वद्ययामेष्वष्ट सुराघव ।।
End:	एकादश्यादिकः सौरे चतुर्थ्य ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.2 x 29 cm.
Lines:	14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	73
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 35	**Manuscript No.:** 15343
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15343
Title of Work:	Vaidhṛtivyatīpātasaṁkrāntiśantiḥ
Title of Work in Sanskrit:	वैधृतिव्यतीपातसंक्रान्तिशान्तिः
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	No
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vaidhṛtivyatīpātasaṁkrāntiśantiḥ is a work of Dharma Śāstra. In the MS the pattern of Nakṣtra Śānti has been given. Ink is bleeding on all folios due to this the MS is difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथवैधृतिव्यतीपात संक्रांति शांति।। शौनकः।। कुमारजन्मकालेतु व्यतीपाश्च वैधृतौ।।
End:	यथा विभवं यानशय्याशनादीनि च दत्वा ब्राह्मणान्भोजयित्वा स्वयं भुंजीत।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 24 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1907
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	5
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of first page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 36	**Manuscript No.:** 15264
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15264
Title of Work:	Vaiśākha Māhātmaya
Title of Work in Sanskrit:	वैशाख माहात्म्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vaiśākha Māhātmaya has been taken from Skāṇda Purāṇa. The MS contains 24 Adhayāyas. Some folios are badly worm eaten from borders, due to this some text is also missing. Some unknown language is written on folio no.1a. Some folios are difficult to read and some are unreadable.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं देवीं सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत् १।।
End:	श्रणुयाद्वा पठेद्वापि सयाति परमां गतिम् ६५।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 30.5 cm.
Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Kulmaṇi Pāṇḍey

Age:	Saṃvat 1888 Śake 1753
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	87
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 37	**Manuscript No.:** 15300
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15300
Title of Work:	Śayyādānaprayogaḥ
Title of Work in Sanskrit:	शय्यादानप्रयोगः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The pattern of Śayyādāna has been given in the MS. The Colophon has not given in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ शय्यादानप्रयोगः महाभारते शय्यामास्तरणोपेतां सुप्रछादनसंवृतां. .... ।
End:	ब्राह्मणभोजनसंकल्पः ब्राह्मणं प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 25 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 38

Manuscript No.: 15299

Subject: Dharma Śāstra

Accession No.: 15299

Title of Work: Śayyādāna Māhātmya

Title of Work in Sanskrit: शय्यादान माहात्म्य

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śayyādāna Māhātmya is a work of Dharma Śāstra. It throws light on importance of giving bed. Colophon has not given in the MS.

Beginning: श्री रामः अथ शय्यादान माहात्म्यम्।। अथ शय्यादानं महाभारते शय्यामास्तरणोपेतां सुप्रच्छादन संवृतां.......... ।

End: प्रेष्ठं कृत्वा निवेदयेदिति शिवधर्मे शय्यादानं।।

Script: Devanāgarī

Size: 10.6 x 26.2 cm.

Lines: 11 to 12

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 39	**Manuscript No.:** 15242
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15242
Title of Work:	Śivarahasya
Title of Work in Sanskrit:	शिवरहस्य
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śivarahasya has taken from Bṛahmottara Khaṇḍa of Skaṇda Purāṇa. In the MS there are twenty-two chapters called Adhayāyas. Every chapter has its different name. Folio no. 18 is bound inverse by mistake.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ज्योतिर्मात्रस्वरुपाय निर्मलज्ञानरुपिणे नमः शिवाय नित्याय समस्त गुणवृत्तये।। १ ।।
End:	मनसि च विहरंतं वाङ्मनोवृत्तिरूपं परम शिवमनंतानंदसांद्रं प्रपद्ये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 25 cm. (Different)
Lines:	14 to 18
Copier's Name:	Giridhārī Lāla Miśra
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1771

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	80
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 40	**Manuscript No.:** 15165
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15165
Title of Work:	Samayamayūkha
Title of Work in Sanskrit:	समयमयूख
Name of Author:	Nīlakaṇṭha Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Samayamayūkha is a work of Dharma Śāstra. The Author Nilakaṇṭha Bhaṭṭa was the son of Śaṃkara. All folios of the MS are missing from borders due to worm eaten. Some text is also missing. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री सर स्वत्यै नमः।। यो लीलयासं तनुते तत्र विश्वं तत्पालयत्यात्मनि विश्वरुपे।
End:	प्रतिष्ठायां यदि वेष्टिः समाप्यते। पुनः प्रणीय............... ।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 28 cm.
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	69
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.5.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 41	**Manuscript No.:** 17
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	22686
Title of Work:	Sarojakalikā
Title of Work in Sanskrit:	सरोजकलिका
Name of Author:	Kavi Ratna
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sarojakalikā is a work of Dharma Śāstra. The MS has written in very small letters due to this it is difficult to read. The description of Śraddha (श्राद्ध) has given in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ सरोजकलिका लिख्यते।। भास्वता कविरत्नेन प्रयत्नेन.................. ।।
End:	अहं त्र्यायवसेदन्नमतिकृच्छ्रं व्रतं चरन्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 31.5 cm. (Different)
Lines:	19 to 22
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1892
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 42	**Manuscript No.:** 15341
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15341
Title of Work:	Holikā Māhātmaya
Title of Work in Sanskrit:	होलिका माहात्म्य
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Holikotsava Māhātmaya is a work of Dharma Śāstra. In the MS the importance of Holī Pūjan has given. Tittle page of the MS has bound inverse.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। फाल्गुनपौर्णिमास्यां होलिकोत्सवः।। नृपं प्रति नारदवाचो भविष्ये अद्य पंचदशी शुक्ला फाल्गुनस्य नराधिप।।
End:	होलिका पूजामात्रस्तु।। अष्टकूपाभ्यात्रस्तैकत्वात्वं होलिकात्रिशै।।
Script:	Devanāgari
Size:	10.1 x 24.3 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 43	**Manuscript No.:** 15324
Subject:	Dharma Śāstra
Accession No.:	15324
Title of Work:	Holikotsava Vidhānam
Title of Work in Sanskrit:	होलिकोत्सव विधानम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Holikotsava Vidhānam is a work of Dharma Śāstra. The work has taken from Bhaviṣyottara Purāṇa. In the MS by asking Yudhiṣthira Lord Śrī Krisṇa told him Holika Utsava Vidhi.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः युधिष्ठिर उवाच होलिकाया विधिं ब्रूहि यदि तुष्टोसि केशव किं दान कस्य पूजा च किं फलं प्राप्नुयान्नरः १।
End:	चन्दनेन सत्यं हि पार्थ पुरुषोऽथ समाः सुखीस्यात ५६।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.1 x 27.2 cm.
Lines:	6 to 8
Copier's Name:	Talfirāma
Age:	Saṃvat 1828
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Grammar

व्याकरण

Form No.: 44	**Manuscript No.:** 15206
Subject:	Grammar
Accession No.:	15206
Title of Work:	Kārakakhaṇḍanamaṇḍana
Title of Work in Sanskrit:	कारकखण्डनमण्डन
Name of Author:	Śrī Maṇikānta Miśra Muni
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kārakakhaṇḍanamaṇḍana is a work of grammar on Kāraka Prakarṇa by Śrī Maṇikānṭa Miśra Muni.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ।। दोः क्रीडाकृष्यमान त्रिपुर दमन कृच्चंडकोदंड भंग स्फूर्जद् ब्रह्मांड भांडस्फुटनदरकरध्वान निष्णात्वाहुः।।
End:	भेद विवक्षाया भोक्त्तृ भोगायतन विवक्षा च षष्ठी।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 27 cm
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Chandrasen
Age:	Saṃvat 1915
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	11
Condition:	Slightly worm eaten, slightly water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 45	**Manuscript No.:** 15199
Subject:	Grammar
Accession No.:	15199
Title of Work:	Candrikāuttarāddha
Title of Work in Sanskrit:	चन्द्रिकाउत्तरार्द्ध
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Candrikāuttarāddha is a work of Grammar. Mostly text is difficult to read due to very oldness, water and ink stained. Folio no. 1a has a different text which has written inverse. The MS starts folio 1b. Some folios are in brittle condition. Folio no.12a is blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः धातोः इदमधिक्रियते भ्वादिः क्रियावचनो......... ।
End:	अन्नं आस्वादयध्वमित्यभ्यवहरध्वे इत्याख्यात प्रक्रिया।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.2 x 28.5 cm
Lines:	7 to 13
Copier's Name:	Durgādatta Miśra
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	45
Condition:	Worm eaten. water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 21.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 46	**Manuscript No.:** 15204
Subject:	Grammar
Accession No.:	15204
Title of Work:	Paribhāṣā Pātha
Title of Work in Sanskrit:	परिभाषा पाठः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Paribhāṣā Pātha is the collection of all Paribhāṣas validated by Mahābhāṣya.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। व्याख्यानतो विशेष प्रतिपत्तिर्नहि संदेहालक्षणं।
End:	अर्द्धमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यंते वैयाकरणः।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.3 x 26.5 cm
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1910
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4

Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 47	**Manuscript No.:** 15200
Subject:	Grammar
Accession No.:	15200
Title of Work:	Prakriyākaumudī
Title of Work in Sanskrit:	प्रक्रियाकौमुदी
Name of Author:	Rāmacandra Ācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Prakriyākaumudī is a g rammatical work of Paṇinī composed by Rāmacandra Ācārya. Some folio of the MS are missing from borders due to worm eaten. Some text is also missing. Mostly folios are ink stained.
Beginning:	श्री गणपतये नमः।। श्रीमद्विठ्ठलमानम्य पाणिन्यादि मुनीन्गुरुन्।।
End:	पक्षेन्योनयमित्यादि।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 28 cm
Lines:	9 to 13
Copier's Name:	Mohan
Age:	Saṃvat 1634
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	100
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 48 **Manuscript No.:** 15208

Subject: Grammar

Accession No.: 15208

Title of Work: Prauḍhamanoramā

Title of Work in Sanskrit: प्रौढमनोरमा

Name of Author: Bhaṭṭojī Dīkṣita

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Prauḍhamanoramā is a work of Grammar. The author name is not mentioned in the MS. There is a half extra folio between folio no. 61 and 62. Folio no.71 has a big ink spot. The MS is incomplete. Folio 32b has been written inverse.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ध्यायंध्यायंपरं ब्रह्मस्मारं स्मारं स्मारं गुरोर्गिरः सिद्धांत कौमुदी व्याख्यां कुर्म : प्रौढ मनोरमां।

End: यदाकारक शब्दः क्रियापरः करोतिकर्तृ कर्मादिव्यपदेश............ ।।

Script: Devanāgarī

Size: 13 x 30 cm

Lines: 10 to 16

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	73
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 49

Manuscript No.: 15203

Subject: Grammar

Accession No.: 15203

Title of Work: Liṅgānuśāsana

Title of Work in Sanskrit: लिंगानुशासन

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Liṅgānuśāsana is a work of Grammar. There is a Kuṇḍalī on the last folio of the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। लिगम्।। अधिकारोयं।। स्त्री।। अधिकारोयं।।

End: करणाधिकरणयोर्ल्युट्।। सर्वादीनि सर्वनामानि।।

Script: Devanāgarī

Size: 12.5 x 25.2 cm

Lines: 12 to 13

Copier's Name: Hari Prasāda Miśra

Age: Saṃvat 1906

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Good

No. of Folios: 9

Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 50	**Manuscript No.:** 15201
Subject:	Grammar
Accession No.:	15201
Title of Work:	Vaiyākaraṇaprabodha Candrikā
Title of Work in Sanskrit:	वैयाकरणप्रबोध चन्द्रिका
Name of Author:	Vaijala Bhūpāla
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vaiyākaraṇaprabodha Candrikā is a work of Grammar composed by Vaijala Bhūpāla the King of Paṭnā. Very neatly copied by Giridhārīlāla Miśra.
Beginning:	ॐ श्री महागणाधिपतये नमः। हरिहर गुरुभक्तः सर्वलोकानुरक्तस्त्रिभुवनगतकीर्तिः कांतिकंदर्पमूर्त्तिः।।
End:	फलदावालकानां हि भूयाद्विद्यावतां शुभां।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 26.2 cm
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Giridhārīlāla Miśra
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1771
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Copier himself

Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	26
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 51	**Manuscript No.:** 15205
Subject:	Grammar
Accession No.:	15205
Title of Work:	Sārasvatī Prakriyā
Title of Work in Sanskrit:	सारस्वती प्रक्रिया
Name of Author:	Anubhūtī Swarupacāryā.
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sārasvatī Prakriyā is a grammatical work composed by Anubhūtī Swarupacāryā. All folios are difficult to read due to oldness and water stains. The MS is missing from beginning.
Beginning:	............धिश्चल तया चलतया वा विक्षितस्तत्रापादाने पंचमी।
End:	इति तद्धित प्रक्रिया।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 27.3 cm
Lines:	12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 7.9.61 According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 52	**Manuscript No.:** 15198
Subject:	Grammar
Accession No.:	15198
Title of Work:	Sārasvatapūrvārddh
Title of Work in Sanskrit:	सारस्वतपूर्वार्द्ध
Name of Author:	Anubhūtī Swarupācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sārasvatapūrvārddh is a work of Grammar. Some folios are difficult to read due to oldness, water and ink stained. Some folios have the spots of ink.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नम :। प्रणम्य पर मात्मानं वालधी वृद्धि सिद्धये।।
End:	सर्वत्र दध्ना जुहोति पुनर्नु ब्रह्मणस्यति ब्रजतीर्विरेजुः।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 26.5 cm.
Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Bad

No. of Folios: 33

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 7.9.61. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 53	**Manuscript No.:** 15211
Subject:	Grammar
Accession No.:	15211
Title of Work:	Sārasvata Pūrvārddh
Title of Work in Sanskrit:	सारस्वत पूर्वार्द्ध
Name of Author:	AnubhūtīSwarupācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sārasvata Pūrvārddh is a work of Grammar. The folios colour changed to brown. The author may be Anubhūtī Swarupācārya according to the Sanskrit Prākrit Hastlikhit Granth sūchi.
Beginning:	ॐ नमः परमात्मने ।। श्री सरस्वत्यै नमः प्रणम्य परमात्मानं वालधी वृद्धि सिद्धये सारस्वतीमृजंकुर्वे प्रक्रियां नाति विस्तरां।
End:	द्वितयं त्रितयं द्वयं त्रय शेषानिपात्याः कत्यादयः।। इति तद्धित प्रक्रिया।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 27.2 cm
Lines:	8 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	34
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 54	**Manuscript No.:** 15196
Subject:	Grammar
Accession No.:	15196
Title of Work:	Siddhānta Kaumudī
Title of Work in Sanskrit:	सिद्धान्त कौमुदी
Name of Author:	Bhaṭṭojī Dīkṣīta
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Siddhānta Kaumudī is a work of Grammar. The MS is missing from beginning and last.
Beginning:	.............एवं जामात् भ्रात्रादयः।। न।। नरौ ।। नरः ।। हे नः।। न् च।। न इत्यस्यनामि वा दीर्घः।।
End:	नभकुर्छुशं।। भस्यकुर्छुरोश्वोपधाया दीर्घो न स्यात्।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 25 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	81
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 55	**Manuscript No.:** 15197
Subject:	Grammar
Accession No.:	15197
Title of Work:	Siddhānta Kaumudī
Title of Work in Sanskrit:	सिद्धान्त कौमुदी
Name of Author:	Bhaṭṭojī Dīkṣīta
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Siddhānta Kaumudī is a well-known and widely used grammatical work of Bhaṭṭojī Dīkṣīta. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च।।
End:	तत्र कर्त्तरिकरणे च तृतीया कृत्यैः सह प्राग्वत् काक पेया नदी वातछेद्यं तृणं.......... ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 25.5 cm.
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	79
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 56	**Manuscript No.:** 15207
Subject:	Grammar
Accession No.:	15207
Title of Work:	Siddhāntakaumudī
Title of Work in Sanskrit:	सिद्धान्त कौमुदी
Name of Author:	Bhaṭṭojī Dīkṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Siddhāntakaumudī is a work of grammar composed by Bhaṭṭojī Dīkṣita. The MS contains only Pūrvārdha part.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। मुनित्रयं नमस्कृत्य तदुक्तीः परिभाव्य च वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदीयं विरच्यते।
End:	योगविभागादन्यत्रापि द्व द्वं इष्यते इतिद्विरुक्त प्रक्रिया।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 29.5 cm
Lines:	10 to 15
Copier's Name:	No
Age:	Saṃvat 1911 Śake 1776
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	151
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 57	**Manuscript No.:** 15209
Subject:	Grammar
Accession No.:	15209
Title of Work:	Siddhānta Kaumudī
Title of Work in Sanskrit:	सिद्धान्त कौमुदी
Name of Author:	Bhaṭṭojī Dīkṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Siddhānta Kaumudī is a work of Grammar.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्रौत्रांर्हती चणैगुण्यैर्महर्षिभिरहर्दिवं।।
End:	सर्वादीनि सर्वनामानि। स्पष्टार्थे यं त्रिसूत्री।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 30 cm
Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	174

Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 58	**Manuscript No.:** 15202
Subject:	Grammar
Accession No.:	15202
Title of Work:	Sūtrapāṭha
Title of Work in Sanskrit:	सूत्रपाठ
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sūtrapāṭha is a work of Grammar belonging to Sāraswata school of grammar. Besides two folios all folios have written on yellow coloured paper. There is a śloka on folio 1a in praise of God Gaṇeśa.
Beginning:	श्री सरस्वत्यै नमः। संज्ञा च परिभाषा च विधिर्न्नियम एव च।।
End:	दूरादाह्वाने टे प्लुतः।। लोकाच्छेषस्य सिद्धिः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 31 cm
Lines:	5 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 59	**Manuscript No.:** 15210
Subject:	Grammar
Accession No.:	15210
Title of Work:	Ṣaṭkārakaprakriyā
Title of Work in Sanskrit:	षट्कारकप्रक्रिया
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ṣaṭkārakaprakriyā is a work of Grammar. Folio no. 12a and 26b are blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः हिमचन्द कन्देदुकुमुदाम्भोज सन्निभां सरस्वतीं नमस्कृत्य क्रियते बाल वोधनी।
End:	चाशिष्या युष्यमत कुशलसुखार्थाहितैरिति चतुर्थीषष् भवतः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 27.2 cm
Lines:	6 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1928
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good

No. of Folios:	27
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Rāmāyaṇa Evam Mahābhārata

रामायण एवं महाभारत

Form No.: 60	**Manuscript No.:** 15232
Subject:	History
Accession No.:	15232
Title of Work:	Ādhayātama Rāmāyaṇa Setu
Title of Work in Sanskrit:	आध्यात्म रामायण सेतु
Name of Author:	Vālmīkī
Name of Commentator:	Rājā Rāma Vermā
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāyaṇa is a very famous epic of Vālmīkī. The MS contains all the seven Kāṇḍas. Every Kāṇḍa has many Sargas. Every Sarga has a different name. Before starting new kāṇḍa there is a blank sheet. The MS is with a commentary named "Setu" written by Rājā Rāma Vermā was the son of Himmat Vermā. Rāma Vermā was the King of Śṛṅgaverapura. He was the disciple and patron of Nāgeśa Bhaṭṭa. Nāgeśa has taken his name in the beginning of his book always.
Beginning:	श्री गणाधिपतये नमः ।। विसेनवंशजलधौपूर्णाः शीतकरोश्वरः प्रजाह्लादकरो विष्णु भूषणः कौस्तुभोऽपरः ।। १ ।।
End:	सदा समीपे स्थितो भूत्वाश्रिय मातर्नेती सन्वयः। ७७ । ७३ । ७४ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 31.5 cm.

Lines:	9 to 14 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1904
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	264
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 61	**Manuscript No.:** 64
Subject:	History
Accession No.:	12556
Title of Work:	Gajendra Mokṣa
Title of Work in Sanskrit:	गजेन्द्र मोक्ष
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The work has taken from the Mahābhāraṭa.
Beginning:	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। शतानिक उवाच।। मयाहिदेवदेवस्य विष्णोरमिततेजसः।।
End:	गजेंद्र मोक्षणं चैव पंचरत्नानि भारते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	3.6 x 8.1 cm.
Lines:	4
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1809
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	51 (52a to 102a)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 62	**Manuscript No.:** 14
Subject:	History
Accession No.:	22884
Title of Work:	Gitābhāvārtha Dīpikā
Title of Work in Sanskrit:	गीताभावार्थ दीपिका
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS all Bhagvatgita's commentary has given in Sanskrit by the commentator named Śrīdhara Swāmī. Some folio's colour is yellow in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः शेषाशेष मुखव्याख्या चातुंर्यत्वेकवक्रतः दधानमद्भुतं वेदे परमानंद माधवं १।।
End:	अंबु स्वांजलिना निरस्यजलधेरादित्सुरंतर्मणी. नार्त्वेषुकिं निमज्जति जनः सत्कर्णधारं बिना ३ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	17 x 33.8 cm.
Lines:	7 to 17
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	109
Condition:	Slightly worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 63

Manuscript No.: 15223

Subject: History

Accession No.: 15223

Title of Work: Mahābhārata - Karṇa Parva

Title of Work in Sanskrit: महाभारत –कर्ण पर्व

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Mahābhārata is a very famous epic of Vedavyāsa. There are 18 Parva in the Mahābhārata. The MS contains only Karṇa Parva. Some folios are yellow in the MS.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः।। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्।।

End: सुखी जनो महामुनेस्तस्य वचोर्षितं यथा।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.7 x 33.3 cm.

Lines: 12 to 14

Copier's Name: Mādhava Nanda

Age: Saṃvat 1890 Śake 1755

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Good

No. of Folios: 151

Condition: Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.

Seal: Not available

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 64	**Manuscript No.:** 15224
Subject:	History
Accession No.:	15224
Title of Work:	Mahābhārata - Bhiṣma Parva
Title of Work in Sanskrit:	महाभारत – भीष्म पर्व
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mahābhārata is a very famous epic of Vedavyāsa. The MS belongs to Bhiṣma Parva. Some folios of the MS are yellow.
Beginning:	ॐ श्री महामंगल मूर्त्तये श्री गणेशाय नमः ।। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नंरोत्तमं देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्।
End:	ममकेष्वितरेषु च कथं प्रहरतां श्रेष्टाः संप्रहारं प्रचक्रिरे।। संजय उ० समं व्यूहेष्वनीकेषु।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 33 cm.
Lines:	12 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	59
Condition:	Water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 65	**Manuscript No.:** 15225
Subject:	History
Accession No.:	15225
Title of Work:	Mahābhārata - Sabhā Parva
Title of Work in Sanskrit:	महाभारत – सभा पर्व
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mahābhārata is a very famous epic of Vedavyāsa. The MS contains only Sabhā Parva. All folios are worm eaten from borders. Some handwriting is difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमं ।।
End:	सभापर्वणि राजेंद्र हविष्यं भोजये द्विजान्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 30 cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Radhā Krisṇa Pant
Age:	Śake 1685
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad

No. of Folios:	109
Condition:	Worm eaten. water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 15.5.61 According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 66	**Manuscript No.:** 1
Subject:	History
Accession No.:	3621
Title of Work:	Rāmāyaṇa
Title of Work in Sanskrit:	रामायण
Name of Author:	Vālmīkī
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāyaṇa is a very famous epic of Vālmīkī. The MS contains total seven Kāṇḍa. Every Kāṇḍa has many Sargas. Every Sarga has its different name. Bāl Kāṇḍa-1 to 59 folios, Ayodhyā Kāṇḍa-1 to 121 folios, Araṇaya Kāṇḍa-1 to 68 folios, Kiṣkindhā Kāṇḍa-1 to 74 folios, Sundar Kāṇḍa-1 to 72 folios, Yuddha Kāṇḍa-1 to 165 folios, Uttar Kāṇḍa-1 to 78 folios.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। जयति भृगुवंश तिलक : प्रथमकवि विर्द्विजवरः सवाल्मीकिः।।
End:	तेन लोकश्च देवाश्च त्रैलोक्यं स चराचरं। पूजितं तेन येनेहश्रुतं रामायणं शुभं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 35.5 cm.
Lines:	13 to 15 (Different)

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	637
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	On the last folio there are two seals of Rampur Raza Library.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 67

Manuscript No.: 15226

Subject: History

Accession No.: 15226

Title of Work: Rāmāyaṇa Kiṣkindhā Kāṇḍa

Title of Work in Sanskrit: रामायण किष्किंधा काण्ड

Name of Author: Vālmīki

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Rāmāyaṇa is a very famous epic of Vālmīki. This is the religious book of Hindus. There are seven Kāṇḍas in Rāmāyāṇa. The MS contains only Kiṣkindhā Kāṇḍa. In Kiṣkindhā Kāṇḍa there are many sargas. Every sarga has its different name. Some folios are ink stained.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ श्री पुरुषोत्तमाय श्री रामाय नमः।। तौतुद्दष्टा महात्मानौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ... ।

End: निपत्य पारं च महोदधे स्तदा ददर्श लंकाममरावंती यथा।।

Script: Devanāgarī

Size: 12.5 x 27.5 cm.

Lines: 7 to 11

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	110
Condition:	Slightly worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 68	**Manuscript No.:** 15228
Subject:	History
Accession No.:	15228
Title of Work:	Rāmāyaṇa Lankā Kāṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	रामायण लंका काण्ड
Name of Author:	Vālmīki
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāyaṇa Lankā Kāṇḍa is a very famous epic of Vālmīki. The MS contains Lankā Kāṇḍa. In Lankā Kāṇḍa there are many Sargas. Every Sarga has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ लंका कांड लिख्यन्ते ततस्ते राक्षसास्त्रस्तागत्वा रावण मंदिरान्यवेदयत्.. .... ।
End:	लभेत लक्ष्मीं विपुलां नरोत्तमो यथाभिषेकं भुविरामलक्ष्मणाविति ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 32 .5cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	1886 (Saṃvat or Śake has not given.)
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	195
Condition:	Worm eaten water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 69	**Manuscript No.:** 15229
Subject:	History
Accession No.:	15229
Title of Work:	Rāmāyaṇa Uttara Kāṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	रामायण उत्तर काण्ड
Name of Author:	Vālmīki
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāyaṇa is a very famous epic of Vālmīkī and the religious book of Hindus. There are Seven Kāṇḍas in the Rāmāyaṇa but the MS deals only with Uttara Kāṇḍa. There are 111 Sargas in Uttar Kāṇḍa. The folios colour changed to brown.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री रामचंद्रायनमः श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः घं अविघ्न कुरु प्राप्त राज्यस्य रामस्य राक्षसानां वधेकृते. ..... ।
End:	येन सृष्टं मिदं विश्वं रामाख्यं विष्णुमाश्रये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 34 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Yamunādāsa Gurjar Vaiśh
Age:	Saṃvat 1998

Place of Copying:	Moradabad
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	164
Condition:	Water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 70	**Manuscript No.:** 15227
Subject:	History
Accession No.:	15227
Title of Work:	Rāmāyaṇa Sundara Kāṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	रामायण सुन्दर काण्ड
Name of Author:	Vālmīki
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāyaṇa is a very famous epic of Vālmīki. This is the religious book of Hindus. There are seven Kāṇḍas in Rāmāyāṇa. The MS contains only Sundara Kāṇḍ a. In Sundara Kāṇḍa there are many Sargas. Every Sarga has its different name.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः जितंभगवतातेन हरिणा लोक धारिणा अजेन विश्वरूपेण निर्गुणेन गुणात्मना १ ।
End:	प्रग्रह्यरक्षां सितदायुधानि युगांतवाताद्रव संविचेरुः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 32 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	234
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting. 2 Folios of starting repaired with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 71 | **Manuscript No.:** 15230

Subject: History

Accession No.: 15230

Title of Work: Satyopākhyāna

Title of Work in Sanskrit: सत्योपाख्यान

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The MS is a work of History. The God Rāma's stories have given in it. The conversation is among different Ṛṣi Munīs.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः।। श्री रामचन्द्राय नमः।। ॐ दसरथ सुतरामं योगिध्येयांघिद्वंद्वमजशिवसनकाद्यैः पूज्यमानं सदैव।।

End: वर्णयामि महापुण्यंश्रोतृणामघमोचनम्।। ८५ ।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.5 x 31.7 cm.

Lines: 9

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Good

No. of Folios: 136

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.8.1961. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 72	**Manuscript No.:** 15231
Subject:	History
Accession No.:	15231
Title of Work:	Satyopākhyāna
Title of Work in Sanskrit:	सत्योपाख्यान
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Satyopākhyāna is a work of History. Some folios are missing from borders due to being worm eaten. Some handwriting is also missing. Folio 59, 60 and 61 are badly damaged.
Beginning:	ॐ श्री ग णेशाय नमः।। श्री शौनक उवाच।। सूत सूत महार्वुद्धे श्रीराम चरितं वदयस्य श्रवणमात्रेण भवेन्मुक्तो न संशयः।।
End:	वालचरित्रेणको............................ ।
Script:	Devanāgarī
Size:	16 x 32 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	61
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 15.5.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 73	**Manuscript No.:** 34
Subject:	History
Accession No.:	24841
Title of Work:	Saptaślokī Gītā
Title of Work in Sanskrit:	सप्तश्लोकी गीता
Name of Author:	Śaṅkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains only 7 Ślokas taken from the Bhagavad Gītā. 3 Ślokas have been written after this just to serve as filler.
Beginning:	ॐ मित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन् यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गातिं १।।
End:	सप्तभिः श्लोकै अस्तोति ये व न संशयः ७।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	3 (84b to 86a)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 74	**Manuscript No.:** 6
Subject:	History
Accession No.:	22690
Title of Work:	Harivaṁśa Purāṇam
Title of Work in Sanskrit:	हरिवंश पुराणम्
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Harivaṁśa Purāṇa has taken from the Mahābhārata. The MS contains 265 Adhayāyas. Every Adhayāya has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री व्यासाय नमः।। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।।
End:	एतत्सर्व गुणोपेतं श्रोतव्यं भूतिमिच्छता।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 30 cm.
Lines:	12 to 14 (Different)
Copier's Name:	Ramdayalu Śarmā
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	427
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 75	**Manuscript No.:** 15192
Subject:	History 11
Accession No.:	15192
Title of Work:	Śrībhagavadgītā
Title of Work in Sanskrit:	श्रीभगवद्गीता
Name of Author:	Bhagwān Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrībhagvadgītā is a work of history composed by Bhagwān Vedavyāsa. Some Ślok : of Gītā are taking in the MS copied by Girīdhārīlāl Miśra. The copied paper of the MS is very thin and this is a small MS.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ अस्य श्री भगवद्गीता मालामंत्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिरनुष्टुप्छंदः श्रीकृष्णः परमात्मादेवता................ ।
End:	यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः तत्र श्रीर्विजयोभूति र्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ६६ ।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 14.5 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Giridhārīlāla Miśra

Age:	Saṃvat 1930
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Kāliyānadāsa Miśra
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	65
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 76	**Manuscript No.:** 15184
Subject:	History
Accession No.:	15184
Title of Work:	Śrībhagvad Gītā with Subodhinī
Title of Work in Sanskrit:	श्रीभगवद् गीता सव्याख्या
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrī Bhagvad Gītā Vyākhya is a commentary named Subodhinī. Folio no. 100 is torn from left side. Folio 26b and 41b have written inverse. Folio no. 83 and 102 are missing from the MS. There are 18 chapters in the MS. Every chapter has a different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। शेषाशेषमुखव्याख्या चातुर्य्यं त्वेकवक्त्रतः।।
End:	श्री कृष्णार्जुन संवादे योगशास्त्र नृगुण संन्यास योगो नाम अष्टादशोध्याय १८।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 32.5 cm. (Different)
Lines:	6 to 18 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	111
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 77	**Manuscript No.:** 62
Subject:	History
Accession No.:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhagvadgītā
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भगवदगीता
Name of Author:	Vedvyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhagvadgītā is a famous work of Hindus. It is the part of Mahābhārta named Bheeṣm Parva. Bhagvadgītā has said by God Śrī Kriṣṇa to teach the lesson of Karma to the men. The MS contains all the eighteen Adhayāyas. In the MS first two folios and last two folios are blank.
Beginning:	अथ श्री भगवद्गीता प्रारभ्यते ।। श्री गणेशाय नमः ।। ॐ अस्य श्री भगवद्गीता माला मंत्रस्य भगवान्वेदव्यास ऋषिः ।।
End:	तत्र श्रीर्विज़यो भूति र्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम ।। ७८ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.2 x 15 cm.
Lines:	9 (Different)
Copier's Name:	Kesarāma Brāhamiṇ

Age:	Saṃvat 1855
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	87
Condition:	Worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Jyotiṣa

ज्योतिष

Form No.: 78	**Manuscript No.:** 15126
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15126
Title of Work:	Kalpavallī
Title of Work in Sanskrit:	कल्पवल्ली
Name of Author:	Viṭṭhala Dikṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kalpavallī is an astrological treatise on Jyotiṣa Śāstra. The MS is a commentar y. Some folios have tables.
Beginning:	यथा।। श्री शाके।। १५७२ ।। संवत् १७०७ ।। मास ।। १० ।। तिथौ ।। ७।।
End:	अथ दशा प्रवो Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	18 x 26 cm.
Lines:	8 to 21
Copier's Name:	Hariprasāda Miśra
Age:	Śake 1750
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	18
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 79	**Manuscript No.:** 15128
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15128
Title of Work:	Kalpavallī
Title of Work in Sanskrit:	कल्पवल्ली
Name of Author:	Viṭṭhala Dikṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kalpavallī is an astrological treatise on jyotiṣa Śāstra composed by Viṭṭhala Dikṣita. There are three tables on folio no. 2a.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। गौरीपतिमादरेण गौरीसुतं च प्रनिधायचित्ते।
End:	सहोदशायां गुरु संजुतायां।।
Script:	Devanāgarī
Size:	16.5 x 24.8 cm.
Lines:	15 to 17
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, wat er stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 21.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 80	**Manuscript No.:** 15104
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15104
Title of Work:	Kalpavallī Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	कल्पवल्ली पद्धति
Name of Author:	Viṭṭhala Dīkṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kalpavallī Paddhati is one of the reputed works on Jyotiṣa Śāstra. The MS contains 66 Ślokas composed by Viṭṭhala Dīkṣita.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। गौरीं च गौरीपतिमादरेण गौरीसुतं चप्रणिधाय चित्ते।
End:	समुल्लसत्पद्धति कल्पवल्यां दशासमेतत्कुसुमं समाप्तम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.3 x 27 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	5
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 81	**Manuscript No.:** 15143
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15143
Title of Work:	Kalpavallī Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	कल्पवल्ली पद्धति
Name of Author:	Viṭṭhala Dikṣita
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kalpavallī Paddhati is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Viṭṭhala Dikṣita the son of Woo-Woo Śarmā. Some folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। गौरीं च गौरीपतिमादरेण गौरीसुतं च प्रणिधाय चित्ते।
End:	अतिचारेगते जीवे केचिद्वक्र समागते कन्यका विधवा प्रोक्ता तस्मादेतौ विवर्जयेत्।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 19 cm.
Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 82	**Manuscript No.:** 15114
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15114
Title of Work:	Kāmadhenu Paddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	कामधेनु पद्धतिः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kāmadhenu Paddhatiḥ is a work on Jyotiṣa Śāstra. The Author of the MS has not mentioned his name, described about Janma patrī.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। विधि हरीश दिनेश गजानन द्रुहिणजा गुरुपाद सरोरुहं।
End:	असकृत्कर्मभिः संस्कृता ग्रहा लिख्यंते।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.4 x 27.2 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 83	**Manuscript No.:** 15090
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15090
Title of Work:	Keśavī Paddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	केशवी पद्धतिः
Name of Author:	Śri Keśava Ācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Keśavī Paddhatiḥ is composed by Śri Keśava Ācārya. He described Jyotiṣa in it. There is a blank table on the last folio of MS which name is giving Keśavi mool.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। नत्वाविघ्नपशारदाच्युतशिवं ब्रह्मार्कमुख्यान् ग्र हान्कुर्वे जा तकपद्धतिं स्फुटतरां ज्योतिर्विदां प्रीतये।
End:	तेनोक्तेयं पद्धतिः जातकी या चत्वारिंशद्वृत्तबोधा सुबोधा।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 31 cm.
Copier's Name:	Giridhārīlāla Śarmā
Age:	Saṃvat 1906
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	5
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 84	**Manuscript No.:** 15095
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15095
Title of Work:	Keśavīyapaddhatiḥ
Title of Wo rk in Sanskrit:	केशवीयपद्धतिः
Name of Author:	Keśava
Name of Commentator:	Bhārdwāj Lakṣmaṇa Daivajña
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Keśavīyapaddhatiḥ is composed by Bhārdwāj Lakṣmaṇa Daivajña, son of Bhārdwāj Narhari Dīkṣita. He described Jyotiṣa in it. The MS contains many tables of Jyotiṣa Śāstra.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नम :। न त्वेति जातक पद्धति कुर्वेइत्यन्वयः........ ।
End:	लीलावती वीजप्रक् श्री विद्यापति मुकुदसदितेनास्मिहिः सन्मानके।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 31.5 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	27
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 85 **Manuscript No.:** 15169

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15169

Title of Work: Keśavī Udhāraṇa

Title of Work in Sanskrit: केशवी उदाहरण

Name of Author: Viśvanātha Daivajña and Keśava Daivajña

Name of Commentator: Not mentioned

Language : Sanskrit

About the Manuscript: Keśavī Udhāraṇa is a work of Jyotiṣa composed by two authors Viśvanātha and Keśava. The author Viśvanātha was the son of Diwākar according to the MS. The MS has different writing. All folios have a big hole in the middle of the MS eaten by worm. Due to this hole some text is missing. Some folios have tables of Jyotiṣa Śāstra.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ।। श्री गणेशं नमस्कृत्य केशवीनाम पद्वतेः ।। गणितं विश्वनाथेन क्रियते बालबुद्धये ।।

End: जातक पद्धतिं होराविल्य दवांयांति लोके मानंयशश्रवते [illegible] इति ग्रंथ पाठस्य फलश्रु[illegible]

Script: Devanāgarī

Size: 14 x 36 cm.

Lines: 10 to 16

Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1813
Place of Copying:	Nyondhanā city
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	31
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 86	**Manuscript No.:** 15181
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15181
Title of Work:	Golādhyāya Saṭīka
Title of Work in Sanskrit:	गोलाध्याय सटीक
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Golādhyāya Saṭīka is the fourth part of Siddhānta Śiromani of Bhāskarācarya. A well known and widely used astronomical work with commentary by the author himself. All folios of the MS are missing from right side therefore Some text is also missing. The MS is incomplete.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ।। ।। अथ गोलाध्यायो व्याख्यायते ।। ।। गोलाध्याये निजे या या अपूर्वा विषमोक्तमः तास्ता बालाववोधाय संक्षेपाद्विवृणोम्यहं ।।
End:	मध्यममुक्ति तुल्यासु युतया सावनं द्विरात्रमु...... .... ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 29.5 cm. (Different)
Lines:	7 to 14

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 87	**Manuscript No.:** 51
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	17326
Title of Work:	Grahadaśāphala
Title of Work in Sanskrit:	ग्रहदशाफल
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Grahadaśāphala is a work of Jyotiṣa Śāstra.
Beginning:	अथ रवि दशा फलानि।। भानोर्दशायां हि विदेशवासो भवेत्कदाचिन्ननुमानवानां।।
End:	इदं तु पूर्वे प्रविचार्य सर्वम् प्रश्न प्रसूत्यादिषु कल्पनीयं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.8 x 29.5 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 88	**Manuscript No.:** 15094
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15094
Title of Work:	Grahalāghva
Title of Work in Sanskrit:	ग्रहलाघव
Name of Author:	Viśvanātha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Grahalāghava is composed by Viśvanātha the son of Diwākara of Golagrāma. The MS is a work of Jyotiṣa Śāstra contains some tables. Folios colour is sky blue.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। ज्योतिर्विद्गुरुणा गणेशगुरुणा निर्मथ्य शास्त्रांबुधिंयच्चक्रे ग्रहलाघवं विवरणं........... ।
End:	इदं तदा तु गणकैः स्वान्ते सदा धार्यताम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 33.5 cm.
Lines:	9 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1793
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	58
Condition:	Worm eaten, water stained and n ew guarding.
Seal:	The technical restroration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 89	**Manuscript No.:** 15175
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15175
Title of Work:	Grahalāghavasaya Udāharaṇam
Title of Work in Sanskrit:	ग्रहलाघवस्य उदाहरणम्
Name of Author:	Daivajña Viśvanātha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Grahalāghavasaya Udāharaṇam is a work of Jyotiṣa written by Daivajña Viśvanātha, son of Daivajña Diwākar. Some folios colour is yel low. Some folios have different type stains. Folio no.4o has a table of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः॥ अथ ग्रह लाघव करणस्य व्याख्या। यत्र कल्पादेर्ग्रहा नयनं ससिद्धांतः।
End:	अत्रकलासु किंचिद्वैसादृश्यं दृश्यतेस्वल्पांतरत्वाददोषः।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 26.5 cm.
Lines:	12 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	51
Condition:	Worm eaten. water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 90	**Manuscript No.:** 15160
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15160
Title of Work:	Graha Sāriṇī
Title of Work in Sanskrit:	ग्रहसारिणी
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Graha Sāriṇī is an astrological work. All folios have tables of Jyotiṣa. First three folios of MS are blank. Folio 7a has written inverse. The calcultion of the moment of the Grahas are given in the MS. Last 3 lines are in Hindi about the direction of use.
Beginning:	सारिणी बनी है। शनिमार्गार्क १२ द्यलेयुक् शके १४ वक्रदिना.......... ।
End:	प्रथम कोष्ठ सै कृष्ण पक्ष जानना और द्वितीय कोष्ठ सै शुक्ल पक्ष जानना।
Script:	Devanāgarī
Size:	19.5 x 30 cm. (Different)
Lines:	15 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	14
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 91	**Manuscript No.:** 15171
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15171
Title of Work:	Grahasphuṭīkaraṇa
Title of Work in Sanskrit:	ग्रहस्फुटीकरण
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language :	Sanskrit
About the Manuscript:	Grahasphuṭīkaraṇa is a work of Jyotiṣa and based on Sūryasiddhānta.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ ग्रहाणां स्फुटीकरणम् आदौकोष्ठ त्रयंकृत्वा तत्रादौमध्यमं लिखेत्........... ।
End:	सूर्य सिद्धांत प्रकारेण चर संस्कारोनोक्तः सर्वदेशे अर्द्धरात्रेरेकत्वात् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 29.2 cm.
Lines:	11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 92	**Manuscript No.:** 15176
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15176
Title of Work:	Candrāvasthānayanam
Title of Work in Sanskrit:	चन्द्रावस्थानयनम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Candrāvasthānayanam is a work of Jyotiṣa Śāstra. Last three folios of the MS are blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ चंद्रस्य द्वादश अवस्था नयनं षष्ठिघ्नगतनक्षत्रं तत्कालघटिकान्वितं......... ।
End:	चंद्रक्रियायां हि घटिकादिफलंभवेत् इति चंद्रावस्था फलं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 15.3 cm.
Lines:	13 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	6
Condition:	Paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 93	**Manuscript No.:** 60
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	20179
Title of Work:	Januḥpatrika
Title of Work in Sanskrit:	जनुःपत्रिका
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Januḥpatrika is a work of Jyotiṣa Śāstra. Some text has written in english on folio no. 1a. The MS starts on folio no. 2a. The MS looks like a Janam Patrī. Some tables and cakras are also given. In the MS some text is in Sanskrit and some is in Hindi.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। सन्मंगलाशीर्वचनान् वितानि पद्यानि चाग्रे समुदाह्रियंते।।
End:	यथाकाले समये समयेषु फलान्यूहानि।।
Script:	Devanāgarī
Size:	20.4 x 16 cm.
Lines:	Different
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	93
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 94	**Manuscript No.:** 35
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	Not given
Title of Work:	Jātakālaṅkāra
Title of Work in Sanskrit:	जातकालंकार
Name of Author:	Gaṇeśa Kavi
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jātakālaṅkāra is a work of Jyotiṣa Śāstra. The MS contains five chapters named Adhayāyas. Every chapter has its different name. Folios have not bound in sequence by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः सानंदं प्रणिपत्य सिद्धि सदनं लंबोदरं भारतीं सूर्य्यादि ग्रह मंडलं निज गुरुं भक्त्या हरं स्थितं........... ।
End:	संस्कृता विहरतां भवतां में मानसेव सहसीति कवीनाम् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	18.2 x 26 cm.
Lines:	17 to 18
Copier's Name:	Hari Prāsada Miśra
Age:	Śake 1750
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 95

Manuscript No.: 15101

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15101

Title of Work: Jatakābharaṇam

Title of Work in Sanskrit: जातकाभरणम्

Name of Author: Śri Daivajña Ḍhunḍhirāja

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Jatakābharaṇam is composed by Śri Daivajña Ḍhunḍhirāja. The work belongs to Jyotiṣa. Folios 1 to 14 are some missing from upper side and some are missing from lower side. Some hand writing is also missing.

Beginning: श्री गणेशाय नमः श्री देसदाहं हृदयारविंदे पादारविन्दे वरदस्य वन्दे............।

End: नाना ग्रंथं सविलोक्यस्वशक्त्या भक्त्या युक्तं लिख्यते चायुरेतत्।

Script: Devanāgarī

Size: 16.5 x 27.3 cm.

Lines: 6 to 15

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1910

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	111
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 12.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 96	**Manuscript No.:** 15132
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15132
Title of Work:	Jātakābharaṇam
Title of Work in Sanskrit:	जातकाभरणम्
Name of Author:	Ḍhunḍhirāja
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jātakābharaṇm is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Ḍhunḍhirāja. There is a table on folio no. 1a. Some folios have been written inverse.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। श्रीदं सदांह हृदयारविंदे पादारविंदे वरदस्य वंदे।।
End:	सूरस्त्यागी साहसी भूरिकर्त्ता कोपार्त्तोपि स्याच्छिराक्तोति दक्षः धूर्त्तः क्रूरोत्यं।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 30 cm.
Lines:	11 to 15 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	40
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 97	**Manuscript No.:** 15133
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15133
Title of Work:	Jātakābharaṇam
Title of Work in Sanskrit:	जातकाभरणम्
Name of Author:	Ḍhunḍhirāja
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jātakābharaṇm is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Ḍhunḍhirāja. Some folios are not readable. Some folios have been written inverse. There is a round table on folio 1a. Some folios are ink stained.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। श्रीदं सदांह हृदयारविंदे पादारविंदे वरदस्यविंदे।।
End:	इति मेष संक्राति विचारः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 29.8 cm.
Lines:	8 to 12 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	64
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 98	**Manuscript No.:** 15170
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15170
Title of Work:	Jātakābharaṇam
Title of Work in Sanskrit:	जातकाभरणम्
Name of Author:	Śrī Ḍhunḍhirāja
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jātakābharaṇam is a work of Jyotiṣa composed by Ḍhunḍhirāja. The MS is missing from beginning. Some folios are missing from sides. Some folios have spots of ink and some hand wri ting is not readable due to water stains.
Beginning:	.... भवेदायु वर्षाणां नवति ध्रुवं।। भाद्रपदासिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे ५।।
End:	नाना ग्रंथं संविलोक्य स्वरात्तया भक्त्या युक्त लिख्यते चायुरेतत ३३।।
Script:	Devanāgrī
Size:	14.5 x 28 cm. (Different)
Lines:	11 to 15
Copier's Name:	Śrī Girdhārīlāla
Age:	Saṃvat 1828

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 99	**Manuscript No.:** 15109
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15109
Title of Work:	Jaimini Sūtra
Title of Work in Sanskrit:	जैमिनिसूत्र
Name of Author:	Jaimini
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jaimini sūtra is a work about Jyotiṣa and it has been written in maxims.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। पार्क्विरा शौपितृलाभयोः ।
End:	पुत्रमणिरमणीबुधकेतुर्वा ।। शुभ चंद्राभ्या ।। स्व लग्ननाथश्च ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 29 cm. (Different)
Lines:	13 to 14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 100

Manuscript No.: 15145

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15145

Title of Work: Jyotiṣaratnamālā

Title of Work in Sanskrit: ज्योतिषरत्नमाला

Name of Author: Śripati

Name of Commentator: Author himself

Language: Sanskrit and Marathi

About the Manuscript: Jyotiṣaratnamālā is an artrology text composed by Śripati. Śripati was the son of Nagadeva, sometimes written as Namadeva and the grandson of Keśava. Sripati was a follower of the teaching of Lallā writing on astrology, astronomy and Mathematics. Sripati wrote Jyotiṣaratnamālā an astrology text in twenty chapters based on the Jyotiṣaratanakośa of Lallā. Sripati wrote a commentary on this work in Marathi and it is one of the oldest works to have survived that is written in that language. The MS contains six chapters named Prakaraṇa. The sixth chapter of the MS is incomplete. The śolakas of the MS are in Sanskrit and their commentry is in Marathi.

Beginning: दर्ण श्री गुरुभ्यो नमः।। श्री सर स्वत्यै नमः।। श्री गणेशाय नमः।। प्रलवविरतिमध्यज्ञानविंध्यानितांतं।।

End: अश्विनी उत्तरात्रिणि पुनर्वसु पुष्परेवती।।

Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 24.7 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	33
Condition:	Worm eaten. water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	Not mentioned
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 101	**Manuscript No.:** 29
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15154
Title of Work:	Jyotiṣaāśstrasāra
Title of Work in Sanskrit:	ज्योतिषशास्त्रसार
Name of Author:	Narrated by Śiva
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This is a treatise on Astrology and claims to be the gist of the same. This poses to be a dialogued between Śiva and Devī. There are copious spelling mistakes in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री देव्युवाच।। अरत्त्यंधकोमहादैत्यो ज्योतिशास्त्र विशारदः।।
End:	तस्य संदर सनादेव ज्ञायते वै शुभाशुंभं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 22.5 cm. (Different)
Lines:	6 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 102	**Manuscript No.:** 15146
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15146
Title of Work:	Toḍarānanda
Title of Work in Sanskrit:	टोडरानन्द
Name of Author:	Toḍara Bhūpati
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Toḍarananda is an astrological treatise on proper moments for the performance of certain acts composed by Toḍara Bhūpati. Some text is missing on borders due to worm eaten.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नमस्कृत्य गणेशानं गौरी हृत्पद्म भास्करम्।
End:	अत्रान्यदभिषेक विधानं सांगोपांगराज नीति सौख्ये द्रष्टव्यं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 32.5 cm.
Lines:	8 to 16 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1863 Śake 1728
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	78
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 103	**Manuscript No.:** 15129
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15128
Title of Work:	Tājak Padamkośa
Title of Work in Sanskrit:	ताजक पद्मकोश
Name of Author:	Vedarāma Miśra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tājak Padamkośa is a work of Tājik branch of Jyotiṣa Śāstra composed by Vedarāma Miśra. The MS ends on folio 13a. Folio 13b and 14a has an extra text.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। अथ सूर्यफलं।। रविर्लग्न गोवातपित्रं करोति कलित्रांगपीडा शिरोत्याक्षरोगं।
End:	नास्तिवर्षे श्वरोयत्र तद्वर्षे मरणंध्रुवं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 24.3 cm.
Lines:	7 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1888 Śake 1754
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	14
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 104	**Manuscript No.:** 15117
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15117
Title of Work:	Tajikanāyakam
Title of Work in Sanskrit:	ताजिकनायकम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tajikanāyakam is a treatise on Jyotiṣa Śāstra. There is a table on folio 4a.
Beginning:	श्री गणपतये नमः।। विज्ञायते ज्ञानिभिरत्र पुंसां शुभाशुभं जन्म फलं विलग्नात्।।
End:	षड्भक्तमंशादित आप्तकालं नियोजयेत् जन्मघटीपलेषु।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 26.5 cm.
Lines:	8 to 15
Copier's Name:	Girdhārīlāla Miśra
Age:	Saṃvat 1908 Śake 1773
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 105

Manuscript No.: 15102

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15102

Title of Work: Tajikanīlakaṇṭhī

Title of Work in Sanskrit: ताजिकनीलकण्ठी

Name of Author: Nīlakaṇṭha

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Tajikanīlakaṇṭhī is a very famous work of Jyotiṣa Śāstra composed by Nīlakaṇṭha. There are different types of ink stains on all folios. Some folios have tables of Jyotiṣa. Tājika deals with the annual predication.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः हेरंबं भुवनस्य शीर्षम धुलिब्ध संसक्त पादांवुजं गौरी हृत्कमल प्रकाश तरणिं विघ्नाटवीपावकं।

End: वपुयो ग्रंथपूर्ति सुकृतार्पणतस्तान्मध्यमिष्टं फलदो गणनाथः।

Script: Devanāgarī

Size: 14.7 x 32 cm.

Lines: 11 to 15

Copier's Name: Yamunādāsa Gurjar

Age: Saṃvat 1908

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	138
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India According to the seal of last page. Date is not mentioned in seal.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 106	**Manuscript No.:** 15131
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15131
Title of Work:	Tājikanīlakaṇṭhī
Title of Work in Sanskrit:	ताजिकनीलकण्ठी
Name of Author:	Nīlakaṇṭha
Name of Commentator:	Suriman Prasāda
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tājikanīlakaṇṭhī is a treatise on Tājika branch of Jyotiṣa Śāstra. The MS is a commentary of Suriman Prasāda. Some folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेश[illegible] नमः चंडीकुडंलमाकलय्य कुतुकात् दंडाभ सुंडाग्र गंकृत्वातां....... ।
End:	विचार्यफलं क्रमं निगद्य वक्तव्यं ।।
Size:	13.5 x 29.3 cm.
Lines:	8 to 12 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad

No. of Folios:	48
Condition:	Worm eaten. water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 107	**Manuscript No.:** 15173
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15173
Title of Work:	Tājikanīlakaṇṭhī
Title of Work in Sanskrit:	ताजिकनीलकण्ठी
Name of Author:	Nīlkaṇṭha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tājikanīlakaṇṭhī is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Nīlkaṇṭha. In the last of the MS some folios are missing from left side due to worm eaten. Some text is also missing. Some folios have tables of Jyotiṣa Śāstra. Some hand writing is difficult to read due to water stained.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः चंडी कुंडल भाकप्य कुतुका दंडाभशुंडाग्रता द्वडवंरेपशुपते....... ।
End:	तज्जन्म कालमधिकृत्य द्रुष्टमतंनिरस्य दूषण दानेन दूरी ···त्यपनिरुप्य ह्यरचयत् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 29 cm. (Different)
Lines:	10 to 14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	53
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.1961.According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 108	**Manuscript No.:** 15120
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15120
Title of Work:	Tājikabhūṣaṇam
Title of Work in Sanskrit:	ताजिकभूषणम्
Name of Author:	Ḍhunḍhirāja
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tājikabhūṣaṇam is a treatise on Tājika Śāstra. Folio no. 5 and 20 are bound in reverse position. Some folios have tables too.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। भक्तिर्भर्क्तजनस्य यस्य भवति प्रीति प्रतीतिप्रदा स्नेहो.......... ।
End:	निधनतनु मेदारि प्रात्यगः शीतरश्मिर्नहि गुरु युतद्वष्ठोरिककत्सं प्रदिष्ठां. .... ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	21 x 12.8 cm.
Lines:	21 to 26
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	21
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 109	**Manuscript No.:** 15156
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15156
Title of Work:	Dina Sāriṇī
Title of Work in Sanskrit:	दिन सारिणी
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Dina Sāriṇī is a work of Jyotiṣa. The MS has only folio no.1 which contains tables of Jyotiṣa. Some text is not readable.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः दिन सारिणी शकुद्वादश............ .... ।
End:	Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 27.7 cm.
Lines:	20
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 110	**Manuscript No.:** 15097
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15097
Title of Work:	Narapatijayacaryā
Title of Work in Sanskrit:	नरपतिजयचर्य्या
Name of Author:	Narapati
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS deals with Jyotiṣa. Folio numbers from 33 to 49 are not in sequence by mistake. These folios are bound in reverse position. It should be corrected. There are many pictures and many tables of Jyotiṣa in the MS. Some of them are blank table.
Beginning:	ॐ श्री गणपतये नमः ।। श्री सूर्यो जयति ।। मोहांधकारमग्नानां जनानां ज्ञानरस्मिभिः ।
End:	क्रमाद्द्रेष्काणत्ज्ञो ज्ञेया कृशामध्यावलाधिकाः ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 30.5 cm.
Lines:	10 to 14
Copier's Name:	Giridhārīlāla
Age:	Saṃvat 1909

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	77
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 111	**Manuscript No.:** 15163
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15163
Title of Work:	Narapatijayacaryā
Title of Work in Sanskrit:	नरपतिजयचर्या
Name of Author:	Narapati
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Narapatijayacaryā is a treatise of Jyotiṣa composed by Narapati. The Author described Subhāśubha Vicāra. A different type of digrams like Cakra, Yantra and pictures of a Man are given in the MS. The MS is incomplete from begning and the last. Some folios have tables of Jyotiṣa Śāstra. Folio no.30a has a coloured picture of elephant and horse. There are some spots of ink in the MS. The pictures are drawn from red and black Indian ink.
Beginning:	.... ३ ।। ज्योतिरंगामिदं सर्वं ये जानंति मनीषिणः ।।
End:	ग्रीवाबाहुः शिरः कक्षां................ ।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.8 x 30 cm. (Different)
Lines:	12 (Different)

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	52
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India. According to the seal of last page in 7.6.1961.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	Yes
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 112	**Manuscript No.:** 80
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	Not given
Title of Work:	Janma Patrī, Son of Nawab Raza Ali Khan
Title of Work in Sanskrit:	नवाब रज़ा अली खान के पुत्र की जन्मपत्री
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a Janmapatri of the Nawab Raza Ali Khan's son whose name has not been given. The MS is incomplete. Falādeś has also given in urdu language on folio no. 5 . Folio no.4 and 6 are blank.
Beginning:	।।श्रीः।। ।।श्री गणेशाय नमः।। सर्वेश श्रीयशो राज्यमायुः कान्तिं धनं वलम्।।
End:	Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	33.5 x 19 cm.
Lines:	Different
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1980 Śake 1845

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	The work is dedicated to Nawāb Raza Ali Khan.
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	6
Condition:	Slightly worm eaten and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 113	**Manuscript No.:** 83
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	28106
Title of Work:	Janam Patrī of Nawāb Sāhiba
Title of Work in Sanskrit:	नवाब साहिब की जन्मपत्री
Name of Author:	Raj guru
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a Janam Patrī of Nawāb Sāhiba of Rampur state. Before starting the MS index has been also given. 10 folios are blank in the last of the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्रीमत्कुलदेवतायै नमः।।
End:	कष्टः स्याद् व्याधि शत्रुभ्यो जीवजीवांतरे तमः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 15.5 cm.
Lines:	Different
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Dedicated to Nawab Sāhib of Rampur State.

Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	150
Condition:	Slightly worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 114	**Manuscript No.:** 15177
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15177
Title of Work:	Naṣṭapatramānayana
Title of Work in Sanskrit:	नष्टपत्रमानयन
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Naṣṭapatramānayana a manual of Jyotiṣa Śāstra dealing with the information of lost horoscope. Last two folios of the MS are blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अ १ आ २ इ ३ ई ४ उ ५ ऊ ६ ऋ ७ ॠ ८ .... ।
End:	कुजवारी मिथुन राशिः एतादृश समये इति।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.2 x 15.5 cm.
Lines:	11 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 115	Manuscript 15153
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15153
Title of Work:	Nakṣatra Rogāvalī
Title of Work in Sanskrit:	नक्षत्र रोगावली
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nakṣatra Rogāvalī is a short form of Tantras, describing the influence of Nakṣatras on the health of a man and directions for cure. There are three tables of Jyotiṣa on folio no. 8a.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः रोगावली १ अश्विन्यां शूलपीडा च शिरोवर्त्ति विशूचिका।
End:	भोजयेद् ब्र ह्मणांस्तथामुच्यते द शरात्रेणाप्यत ऊर्द्ध विनश्यति।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 14.5 cm. (Different)
Lines:	5 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 116

Manuscript No.: 15130

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15130

Title of Work: Padmakośa

Title of Work in Sanskrit: पद्मकोश

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Padmakośa is a work of Jyotiṣa. The Author name is not given in the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। रविर्लग्नगोवातपित्तं करोति कलत्रांगपीड़ा शिरोत्पत्तिरोगं।।

End: स्वजन्म लग्नंरवितष्टपातः शरद्यतं साभमुखेथि हास्मात्।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.3 x 26.2 cm.

Lines: 15 to 18

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1906 Śake 1771

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 117	**Manuscript No.:** 15089
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15089
Title of Work:	Pañcasvarābhidhāna
Title of Work in Sanskrit:	पंचस्वराभिधान
Name of Author:	Paramasukha Upādhyāya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Pañcasvarābhidhāna has been composed by Paramasukha Upādhyāya. He describes Jyotiṣa in it. The MS contains two chapters.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। श्री गणेशं नमस्कृत्य सिद्धिबुद्धिप्रदायकं।
End:	पापयोगे भवद्रिष्टं शुभयोगे भवेच्छुभम्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 31 cm.
Lines:	10 to 15
Copier's Name:	Giridhārīlāla
Age:	Saṃvat 1915
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	54
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 118	**Manuscript No.:** 15111
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15111
Title of Work:	Pañcasvarābhidhānasya Udāharaṇa
Title of Work in Sanskrit:	पंचस्वराभिधानस्य उदाहरण
Name of Author:	Paramsukha Upādhyāya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Pañcasvarābhidhānasya Udāharaṇa is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Paramsukha Upādhyāya.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री गुरुं च नमस्कृत्य सर्वाभीष्टप्रदायकं पंचस्वराभिधे ग्रंथेकठिनं विषयद्वयं।
End:	सप्तशून्याभावः शेषं योगादिक व्याख्यानरी त्याज्ञैयं।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.2 x 31 cm.
Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1937
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 119 | **Manuscript No.:** 15140

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15140

Title of Work: Pañcasvarābhidhānasya Udāharaṇa

Title of Work in Sanskrit: पंचस्वराभिधानस्य उदाहरण

Name of Author: Paramasukha Upādhāya

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Pañcasvarābhidhānasya Udāharaṇa is a work of Jyotiṣa Śāstra composed by Paramasukha Upādhāya. There is a hole in the middle of the Ms which is filled by the plane paper. Due to this hole, Some text is missing.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। श्री गुरुं च नमस्कृत्य सर्वाभीष्टप्रदायकम्।।

End: इति छिद्र स्वर साधन एवं रीत्या पंचस्वराणां गणितम्।

Script: Devanāgarī

Size: 15.5 x 26 cm.

Lines: 19 to 22

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1888 Śake 1771

Place of Copying:	Not Mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 120	**Manuscript No.:** 15162
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15162
Title of Work:	Praśnadīpaka Tathā Pāṛthivpūjāpaṭala Paddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	प्रश्नदीपक तथा पार्थिवपूजापटल पद्धतिः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Praśnadīpaka Tathā Pāṛthivpūjāpaṭala Paddhatiḥ is a work of Jyotiṣa Śāstra. The fore cast is given in the MS. There is a table of Jyotiṣa on folio no. 1 a. It is a work according to Kerala Jyotiṣa. The work has been taken from Śrī Ketkārinī Tantra Śiva Gorī Nārad Saṃvād.
Beginning:	श्री गेणशाय नमः।। अथ प्रश्नदीपक लिख्यते केरल शास्त्रमतेन।
End:	एते दश प्रकारेषु विधिमंत्राश्च मुच्यते।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.3 x 20.5 cm.
Lines:	14 to 19
Copier's Name:	Giridhārīlāla Miśra

Age:	Saṃvat 1913
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 12.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 121

Manuscript No.: 15096

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15096

Title of Work: Praṣna Vaiśaṇava

Title of Work in Sanskrit: प्रश्न वैष्णव

Name of Author: Nārāyaṇa Dāsa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Nārāyaṇa Dāsa composed Praṣna Vaiśaṇava. Nārāyaṇa Dāsa was the son of Bṛhma Dāsa. There are fifteen chapters in the MS called Adhyāyas. Folio no. 9 and last are bound inverse. The work is based on Jyotiṣa.

Beginning: ॐ स्वस्ति श्री गणपते नमः।। नारायणं परमपौरुषमादिदेवं ज्योतिर्म्मगं शुभकरं च चराचरेशं।

End: तारेव देवीजयता च ताभ्यां नारायणो नो हरिभक्ति राज्ञीत्।।

Script: Devanāgarī

Size: 14 x 29 cm.

Lines: 11 to 19

Copier's Name: Gaṇeśīlāla Miśra

Age: Saṃvat 1929, Śake 1793

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	24
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 122	**Manuscript No.:** 15157
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15157
Title of Work:	Praśnaḥ
Title of Work in Sanskrit:	प्रश्नः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Praśnaḥ is a treatise on Praśnaśāstra branch of Jyotiṣa. Folio no. 1b has been written inverse. The writing of folio 1a and 1b is different.
Beginning:	अथ प्रश्नः तिथिप्रहरसंयुक्तं तारकावारमिश्रितं सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं मार्गस्य लक्षणं।
End:	स्त्रीमद्यमांसं प्रति वचन प्रतीतो यं शुभं करोति मंगलं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 30 cm.
Lines:	8 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 123	**Manuscript No.:** 15091
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15091
Title of Work:	Praśnasāra
Title of Work in Sanskrit:	प्रश्नसार
Name of Author:	Govinda Daivajña
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Praśnasāra is composed by Govinda Daivajña. He described Jyotiṣa in it. Folio no.1 of the MS is inverse.
Beginning:	श्री गणपतये नमः ।। श्री मेघनाथं प्रणिपत्य मूर्ध्ना त्रिशूलखट्वांकित हस्तयुग्मं....... ।
End:	चपामाध्या चतुयष्के चोत्तरात्मिका ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.7 x 31 cm.
Lines:	13 to 15
Copier's Name:	Harī Prasāda Śarmā
Age:	Saṃvat 1906 Śake 1771
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 124 | **Manuscript No.:** 15178

Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15178
Title of Work:	Prasūtikādhyāya and Swapnādhyāya
Title of Work in Sanskrit:	प्रसूतिकाध्याय एवं स्वप्नाध्याय
Name of Author:	Satyanārāyaṇa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Prasūtikādhyāya and Swapnādhyaya is a small MS and the work of Jyotiṣa composed by Satyanārāyaṇa. The MS is missing from beginning and the last. The MS is devided into three parts. The first name is Prasūtikādhyāya. There are 31 Ślokas in it. The second part of the MS is Swapnādhyaya. There are 44 Ślokas in it. The third part's name is not described. To see the MS it seems it is the stuti of Goddess. Folio no. 17 has been written in hindi.
Beginning:	.............नक सदृश : पिंगलः कर्वुरश्च बभ्रुः स्वक्षः प्रथम भवनांद्योषवर्णाप्तुवत्तं स्वाम्या साख्। दिनकरयुताभां द्वितीयंचवेसिः।
End:	अथे इषट्वर्ग लग्नेदेहोवर्गषड्डागकानि...... ।
Script:	Devanāgarī

Size:	7.5 x 13.4 cm.
Lines:	5 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	19
Condition:	Water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 125	**Manuscript No.:** 15093
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15093
Title of Work:	Pārāśari Horā
Title of Work in Sanskrit:	पाराशरी होरा
Name of Author:	Ṛṣi Pārāśara
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Pārāśari Horā is composed by Ṛṣi Pārāśara. The MS contains 13 chapters called Adhayāyas. The work is based on jyotiṣa śāstra.
Beginning:	श्री रामानुजाय नमः। व्यास उवाच। भगवन्सर्वमाख्यातं जातकं विस्तरेण मे।
End:	रष्मिघ्नं चवलाप्र चाचनिष्टमवादकान्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 31.5 cm.
Lines:	9 to 14
Copier's Name:	Gaṇeśīlala Miśra
Age:	Saṃvat 1930
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	12
Condition:	Worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 126

Manuscript No.: 15115

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15115

Title of Work: Pārāśari Horā

Title of Work in Sanskrit: पाराशरी होरा

Name of Author: Ṛṣi Parāśara

Name of Commentator: Viṣṇudāsa

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Pārāśari Horā is a Jyotiṣa work with the commentary by Viṣṇudāsa. There are two tables on folio 5a and 5b. All folios are yellow. There are six chapters called Adhayāyas in the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः। श्री गजास्यं नमस्कृत्य सिद्धिबुद्धि प्रदायकम्।

End: मानवो विख्यातो विजयी भवेदति।।

Script: Devanāgarī

Size: 13 x 28.3 cm.

Lines: 11 to 18

Copier's Name: Gaṇeśīlāla Miśra

Age: Saṃvat 1926

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 127	**Manuscript No.:** 15149
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15149
Title of Work:	Pāśakāvalī
Title of Work in Sanskrit:	पाशकावली
Name of Author:	Sage Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Pāśakāvalī is a work of Jyotiṣa. In the MS the ślokas number are not in serial. Folio no.1 is bound in the end by mistake. On the last folio a śloka and a picture of duck has been given.
Beginning:	श्री गणेशाय नम यत्सत्यं त्रिषुलोकेषु यत्सत्य ब्रह्मचारिषु सत्येन वायवोवान्ति।
End:	एकेनैव तु याग्येन तथैव दिवसेन तु येनमासीज्जराद्वं द्वो गर्गनाममहामुनि।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 25 cm.
Lines:	7 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	14
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 128	**Manuscript No.:** 15100
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15100
Title of Work:	Bṛhajjātakam
Title of Work in Sanskrit:	बृहज्जातकम्
Name of Author:	Varāhamihira
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bṛhajjātakam is composed by Varāhamihira. He describes Jyotiṣa Śāstra in it. All folios are worm eaten from both sides.
Beginning:	.....गणेशाय नमः ।। मूर्तित्वेपरिकल्पितः शशभृतोवर्त्मापुनर्ज्जन्म.......... ।
End:	दिनकर मुनि चरण प्रणिपात कृत प्रसादमति नेदंशास्त्रमुपसंगृहीतं नमोस्तु पूर्व नेतृभ्यः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 29.5 cm. (Different)
Lines:	6 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1870
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	29
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11 5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 129 | **Manuscript No.:** 15167

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15167

Title of Work: Mayūracitrakam

Title of Work in Sanskrit: मयूरचित्रकम्

Name of Author: Nārada

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Mayūracitrakaṁ is a work of Jyotiṣa composed by Nārada. Some folios are missing from borders due to worm eaten. Some hand writing is difficult to read due to water stained. Folio no. 17 of the MS is missing.

Beginning: श्री गणेशाय नमः श्री गुरु चरण कमलाभ्यां नमः अथ मयूर चित्रकं लिख्यते।

End: प्रचुरवृष्टिः समांके स्वल्पिका भवेत्।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.7 x 18.2 cm.

Lines: 12 to 16

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 7.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 130	**Manuscript No.:** 15172
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15172
Title of Work:	Muhūrttagaṇapati
Title of Work in Sanskrit:	मुहूर्त्तगणपति
Name of Author:	Daivajña Rāvala Gaṇapati
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrttagaṇapati is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Daivajña Rāvala Gaṇapati the son of Daivajña Rāvala Hari Śankar Surī according to the MS. Some folios have tables of Jyotiṣa. Some folios have remained half and some are one fourth due to being worm eaten. Some text is also missing.
Beginning:	स्वस्ति श्री गणेशाय नमः।। श्रीमत्या कल्पवल्ल्येव हैमवत्या..... ।
End:	आयुः प्रज्ञां यशः सौख्यं सौभाग्यं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.3 x 30 cm. (Different)
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	86
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 21.9.1961.According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 131	**Manuscript No.:** 15174
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15174
Title of Work:	Muhūrttagaṇapati
Title of Work in Sanskrit:	मुहूर्त्तगणपति
Name of Author:	Daivajña Rāvala Gaṇapati
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrttagaṇapati is a work of Jyotiṣa composed by Daivajña Ravala Gaṇapati the son of Daivajña Ravala Hari Śankar Sūri according to the MS. Some folios have tables of Jyotiṣa. There are 10 chapaters called prakaraṇa in the MS. Every chapter has its different name. After 10 chapters there are some folios in the MS whose name is not given. The MS is incomplete.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः श्री मत्याकल्पवल्येव हैमवत्या निरत्ययः ।।
End:	मूलचित्रानुराधासु विशाखा कृत्तिकामृगे उत्तरारोहिणी ज्येष्ठा ।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 27.5 cm. (Different)
Lines:	9 to 12

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	44
Condition:	Water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 132 **Manuscript No.:** 15099

Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15099
Title of Work:	Muhurtacintāmaṇi
Title of Work in Sanskrit:	मुहूर्तचिन्तामणि
Name of Author:	Daivajña Rāma
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrtacintāmaṇi is composed by Daivajña Rāma, son of Daivajña Ananta. It is an astrological treatise on proper moments for the performance of certain acts. All folios are worm eaten. Last folio of MS is bound inverse.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः कैलाशे पूर्णराकाहिमकर रुचिरे वीक्ष्य बिबंस्वकीयं........ ।
End:	पंचदश शतीमिते शके विनिरमादकार्षीत् शेषं स्फुटं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 31.5 cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Yamunā Dāsa Gurjar
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1772

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	230
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 133	**Manuscript No.:** 15134
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15134
Title of Work:	Muhurttacintāmaṇi
Title of Work in Sanskrit:	मुहर्त्तचिन्तामणि
Name of Author:	Daivajña Rāma
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrttacintāmaṇi is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Daivajña Rāma, son of Daivajña Ananta. The MS contains nine chapters called Prakaraṇa. Every chapter has its different name. Some folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। गौरीश्रवः केतकं पत्रभंगमाकृष्य हस्तेनददन्मुखाग्रे।।
End:	गिरीशनगरे वरे भुजकरे चद्रैर्मिते:।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 28.5 cm. (Different)
Lines:	8 to 12 (Different)
Copier's Name:	Prānasukha Gaura
Age:	Śake 1522
Place of Copying:	In Manonne Grāma near Bālapuri jī.

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	61
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	Yes
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 134	**Manuscript No.:** 15107
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15107
Title of Work:	Muhūrtta Mañjarī
Title of Work in Sanskrit:	मुहूर्त्तमंजरी
Name of Author:	Paṇḍita Yadunandana
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrtta Mañjarī is composed by Paṇḍita Yadunandana. He describes the proper time before starting the work as Bathing, Reading, Marriage, Namkaran, and Annprāśana etc.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। कारुण्यपूर्णो चरणौ सरण्यौ वंदे गुरुणां तरुणां बुजाभौ।
End:	विनिर्मितेयं यदुनंदनेन प्रशेसितायाषु मुहूर्त्तमंजरी।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 28.3 cm.
Lines:	11 to 17
Copier's Name:	Giridhārīlāla
Age:	Saṃvat 1910
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 135	**Manuscript No.:** 15108
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15108
Title of Work:	Muhūrtavallī
Title of Work in Sanskrit:	मुहूर्तवल्ली
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Muhūrtavallī is an astrological treatise. The scriber describes Muhūrt before starting the work as worshipping, reading, writing, wearing new clothes, buying animals and birds etc.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ गर्भाधानं। म। पुष्य । पु। ह। मू। श्रध। वारमं।।
End:	द्रव्य परीक्षण मुहूर्त्तः श्रज्येपुन शद्विस्वभावे चरेलग्ने वलिष्टेज्वेंसतारके।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.7 x 28.5 cm.
Lines:	14 to 18
Copier's Name:	Giridhārīlāla
Age:	Saṃvat 1910 Śake 1775
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 136	**Manuscript No.:** 15158
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15158
Title of Work:	Mūlavicāra Kālavicāra
Title of Work in Sanskrit:	मूलविचार कालविचार
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mūlavicāra Kālavicāra is a work of Jyotiṣa. Different types of vicāra as Jyeṣṭha vicāra (ज्येष्ठ विचार), Kriṣṇa Caturdasi vicāra (कृष्ण चतुर्दशी विचार), are given in the MS. There is a picture of Kālcakra (कालचक्र) on the last folio of MS.
Beginning:	ग्रंथांतरे मूलविचारः कृष्णे तृतीय दशमीवलर्क्षाभूतामही जार्किबुधैः समेता......... ।
End:	कालदंष्ट्रास्य गणनायस्यतस्य महद्भयम् इति काल विचारः ।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.2 x 27.7 cm. (Different)
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 137	**Manuscript No.:** 15119
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15119
Title of Work:	Yogaśatakam
Title of Work in Sanskrit:	योगशतकम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Yogaśatakam is a treatise on Jyotiṣa Śāstra. The author name has not given in the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ योग शतक लिख्यते तत्ररिष्टं त्रिविधं सुनिश्चितानि............ ।
End:	प्रसवकाले केंद्रे वामरपूज्यः प्राणीजीवेद्वर्षशतम् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 30.5 cm.
Lines:	8 to 11
Copier's Name:	Durgādatta Miśra
Age:	Saṃvat 1847
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good

No. of Folios:	11
Condition:	Worm eaten, wat er stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 30.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 138	**Manuscript No.:** 15159
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15159
Title of Work:	Yoginīdaśāphala
Title of Work in Sanskrit:	योगिनीदशाफल
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Yoginīdaśāphala is an influence of certain fairies called yoginis on the destiny of man according to tantric astrological works. The names of these fairies are given in the MS as Manglā, Piñgla, Dhanyakā, Bhrāmari, Bhadrikā, Ulkā, Siddhā and Saṃketa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अमूमंगला पिगंला धन्यकाचत्वथ भ्रामरी भद्रिका चोल्काकां च............ ।
End:	अरोधन व्यये तुंगे करोतिदासानुदासम् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 27 cm. (Different)
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 139	**Manuscript No.:** 15105
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15105
Title of Work:	Yogasāra
Title of Work in Sanskrit:	योगसार
Name of Author:	Bhṛgu
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Yogasāra is composed by Bhṛgu. It belongs to the Bhṛgu Saṃhitā. It is a work on Jyotiṣa Śāstra. He describes the condition of Mangla- Pingla and the peace based on Tantra Śāstra.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ज्ञानिनां च हितार्थाय कविपृष्टे भृगूदितम् येनयोग प्रभावे न जायते।
End:	दानाभावे महादुःखं भृगुणा परिभाषितं इति प्रमोद योगफलं।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 26 cm.
Lines:	13 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1886
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 140 **Manuscript No.:** 15092

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15092

Title of Work: Ramalotkarṣa

Title of Work in Sanskrit: रमलोत्कर्ष

Name of Author: Cintāmaṇi

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Ramalotkarsa is a work of Jyotiṣa Sāstra. All folios of the MS are very difficult to read.

Beginning: श्री गणेशाय नमः। गजास्यं सिन्दूरारुणितवदनं विघ्नदमनं............ ।।

End: [illegible] साक्षी [illegible] साक्षी ।।

Script: Devanāgarī

Size: 13.5 x 32.5 cm.

Lines: 10 to 17

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Not good

No. of Folios:	15
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 141

Manuscript No.: 15113

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15113

Title of Work: Rājayoga

Title of Work in Sanskrit: राजयोग

Name of Author: Ḍhunḍhirāja

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Rājayoga is a part of Jātakābharṇa. The Author Ḍhunḍhirāja was the son by Nṛsiṃhā. The work is belonging to Jyotiṣa. Folio no. 1 of the MS is bound inverse. The MS is incomplete.

Beginning: अथ राजयोगाध्याय सद्विलास कलगर्जनशीलः भुंडिकावलय कृत्प्रतिवेलं....... ।

End: सर्प्पश्वसौम्येषुयमारसूर्ये योगाधिपौ द्वौकथितौ दलाख्यौ........ ।

Script: Devanāgarī

Size: 12.5 x 27.8 cm.

Lines: 10 to 13

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 142 | **Manuscript No.:** 15147

Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15147
Title of Work:	Lagnacandrikā
Title of Work in Sanskrit:	लग्नचन्द्रिका
Name of Author:	Śrī Kāśinātha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Lagnacandrikā is an astrological treatise composed by Śrī Kāśinātha. He described the influence of planets on the destiny of Man and the most auspicious moment of marriages. Some folios have tables of Jyotiṣa. Folio no.3 is bound inverse by mistake. Folio no. 28a has been written inverse. There is a picture of two men talking to each-other on folio 52a.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः त्रिभि स्वरस्थैर्भवेत्नत्री त्रिभिरुच्चैनराधिपः ।।
End:	सप्तविंसांराके शुक्रोविसत्यंसे सनैश्चर : निगद्यते ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 29 cm.
Lines:	8 to 12 (Different)

Copier's Name:	Hetrāma Miśra
Age:	Saṃvat 1861
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	53
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 143 | **Manuscript No.:** 15148

Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15148
Title of Work:	Lagnacandrikā
Title of Work in Sanskrit:	लग्नचन्द्रिका
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Lagnacandrikā is an astrological treatise on Jyotiṣa Śāstra. The Author name has not given in the MS. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। तमिस्राजगरग्रस्तं यो जीवयति भूतलम् तं वंदेपरमानंदं सर्वसाक्षिणमीश्वरं।
End:	चंद्रेणमंगलोयुक्तोजन्मकाले यदा भवेत् तस्य जातस्य गेंहतुल.........।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 29.8 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	11
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been by National Archives Govt. of India in 10.5.196[illegible]. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 144

Manuscript No.: 15180

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15180

Title of Work: Lagnavārāhī

Title of Work in Sanskrit: लग्नवाराही

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Lagnavārāhī is a work of Jyotiṣa Śāstra. All folios are missing from left side. Some text is also missing due to being worm eaten. The MS is missing from beginning.

Beginning: ....जीवति ४ बुधवारेष्टमे मासिपीडावर्षे तथाष्टमे पूर्णो चतुः षष्टिवर्षेत............।

End: सेवकाः नृपहीनं कथं रा[illegible]हीनं कुतोबलम।

Script: Devanāgarī

Size: 7 x 23 cm. (Different)

Lines: 4

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 145	**Manuscript No.:** 15116
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15116
Title of Work:	Laghu Jātaka
Title of Work in Sanskrit:	लघु जातक
Name of Author:	Varāha Mihira Ācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Laghu Jātaka is a work of Jyotiṣa Śāstra. The MS contains seventeen chapters called Adhayāya. Every chapter has a different name.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्ट चरणकमलोपि।।
End:	पंचकेषु विजानीयान्नष्ट जातक सिद्धये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.6 x 25.5 cm.
Lines:	12 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1772
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of R eceiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 146

Manuscript No.: 58

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 20177

Title of Work: Laghu Saṃgrah

Title of Work in Sanskrit: लघु संग्रह

Name of Author: Luxmī Nārāyaṇa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Laghu Saṃgrah is a work of Jyotiṣa Śāstra. The MS contains many pictures like Cakras and Yantras. The table of Jyotiṣa is also given in the MS. The MS is missing from the beginning.

Beginning: ....सूचीकर्म्म।। सूचीकर्म्माप्यदिति .... जमैत्राश्शिष पुष्पे।।

End: प्रतिपदादि तिथौ महेशीदजस्थिता शुभ कनीखलु पृष्ठ भागे।।

Script: Devanāgarī

Size: 10 x 23.3 cm.

Lines: 9 to 12

Copier's Name: Sadānanda

Age: Saṃvat 1825

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	25
Condition:	Slightly worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 147	**Manuscript No.:** 15118
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15118
Title of Work:	Lampākaśāstra
Title of Work in Sanskrit:	लंपाकशास्त्र
Name of Author:	Padmanābha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Lampāka Śāstra is a treatise on Jyotiṣa composed by Padmanābha. The MS contains seven chapters called Adhayāyas. Every chapter has its different name. The MS contains many cakras and tables of Jyotiṣa. There is a commentary called Tilaka.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। गणनाथं रविमुख्यखेचरान् कुलदेवीं विधि विष्णुशंकरान्।।
End:	नागाष्टि श्लोक संबधं धीमतां भूभुजांमुदे पद्मनाभ कृतं शास्त्रं लंपाक लोक भूषणम्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.9 x 26.4 cm. (Different)
Lines:	10 to 13 (Different)
Copier's Nam e:	Gaṇeśilāla
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1772

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	39
Condition:	Worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 148	**Manuscript No.:** 15144
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15144
Title of Work:	Līlāvatī
Title of Work in Sanskrit:	लीलावती
Name of Author:	Bhāskarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Līlāvatī is an Indian mathematician Bhāskara II's treatise on mathematics. His book is on arithmetic is the source of interesting legends that assert it was written for his daughter, Līlavatī. The MS contains four chapters. Some folios have tables of Jyotiṣa. Some different type of picture are given in the MS The Author's name is not mentioned in the MS. Chapter number four is not complete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। प्रीतिंभक्त जनस्ययो जनयते विघ्नंविनिघ्नन स्म ।
End:	तदंर्द्धक्रमात्कोटि करोर्ग ।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 24.5 cm.
Lines:	7 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	38
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 149	**Manuscript No.:** 15150
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15150
Title of Work:	Varṇamālā Praśna
Title of Work in Sanskrit:	वर्णमाला प्रश्न
Name of Author:	Sahdeva
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Varṇamālā Praśna is a work of Jyotiṣa Śāstra. In the MS the forecast is given by the first letter of the name. There is a table of Alphabates on folio 1a. The MS is a portion of Prśnabhairava.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। ॐकारे पूजितं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरं । धनधान्यं सदा नित्यं ॐकारे रक्ष्यते सदा।
End:	इति मंत्रेणं सप्तवारं पठित्वा पुनः विचारयेत्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 23.5 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1936
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained, paper pasting and conservation work.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 150	**Manuscript No.:** 15142
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15142
Title of Work:	Varṇa Varga Ādi Phala
Title of Work in Sanskrit:	वर्ण वर्ग आदि फल
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Varṇa Varga Ādi Phala is a treatise on Jyotiṣa Śāstra. The Author has not mentioned his name in the MS. He gives forcast a ccording to the Varna and Varga of a Man. In the end of the MS there is a blank folio.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ वर्णफलम् स्वधर्मकर्मनिरतः शास्त्राध्ययन तत्परः विनीतः सर्वकार्येषु ब्रह्मवर्ण भवो नरः।
End:	विराम संधेरधिककस्तदानीमागामि भावोत्थफलप्रदः स्यात्।। शुभंभूयात।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 19 cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 151	**Manuscript No.:** 15166
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15166
Title of Work:	Vasantarāja
Title of Work in Sanskrit:	वसन्तराज
Name of Author:	Śrī Śatrunjaya
Name of Commentator:	Śrī Bhānucandra
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vasantarāja is a commentary based on good and bad omens. Some folios have tables and different types of pictures. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः स्वस्ति श्री सदनं यदीयवदनं वेधा विधायाद्भुतम् वीक्ष्याश्चर्यमवाप सस्पृहतया सम्मार्जयन्वाससा ।।
End:	स एव आश्रयो यस्याः सा तथा पश्चात् कर्मधारय. .... ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 32 cm. (Di fferent)
Lines	8 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Not good

No. of Folios: 59

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 152

Manuscript No.: 15139

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15139

Title of Work: Vārṣika Gaṇita paddhati

Title of Work in Sanskrit: वार्षिक गणित पद्धति

Name of Author: Diwākar

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Vārṣika Gaṇita paddhati is a work of Jyotiṣa Śāstra composed by Diwākar. Some folios have tables of Jyotiṣa. Some characters are difficult to read. Folio 1b is blank.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। महोन्धकारौघहरं सुवृत्तं गुरोरधोपिरिथति भाजमुच्चैः।।

End: निमीयते नद्विपादपद्मे मूर्छामदीयो भ्रमशपतोस्तु।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.1 x 15.5 cm.

Lines: 10 to 11

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1888

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	12
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 153	**Manuscript No.:** 22
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15088
Title of Work:	Vṛhajjātakam
Title of Work in Sanskrit:	वृहज्जातकम्
Name of Author:	Varāhamihira
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains all the chapters of Bṛhajjātakam. It is a celebrated work of Jyotiṣa complete in 25 chapters dealing with different walks of astrology. Last some folios of the MS are badly worm eaten due to this some text is also missing. Every chapter has a different name. There is a table of Jyotisa on the last folio of the MS.
Beginning:	श्री कृष्णपरमात्मने नम :। मूर्त्तित्वे परिकल्पित: शशभृतो वर्त्मा: पुनर्जन्मना ।।
End:	युक्ता जन्मन्येतद्यात्रिकं चाभिधास्ये ४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	16 x 31 cm.
Lines:	11 to 14
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	23
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 9.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 154 **Manuscript No.:** 15161

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15161

Title of Work: Śakunacandrikā

Title of Work in Sanskrit: शकुनचन्द्रिका

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śakunacandrikā is a work of Jyotiṣa. All folios from the corner are difficult to read due to water and ink stained. After ending the MS there is an extra text. The phala of Planets are given in the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः अथ शकुनचंद्रिकामाह।।

End: निखातवस्तु लाभं च विरोधो मित्रता भवेत्।।

Script: Devanāgarī

Size: 22.3 x 13.5 cm.

Lines: 22 to 23

Copier's Name: Daśaratha Prasāda

Age: Saṃvat 1871

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Not good

No. of Folios: 3

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.1961. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 155	**Manuscript No.:** 3
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15567
Title of Work:	Jantrī of Śake 1812
Title of Work in Sanskrit:	शाके 1812 की जन्त्री
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a work of Jyotiṣa Śāstra. Folio no.1 is in brittle condition. Due to this some text is also missing. All folios are worm from lower sides. The MS is Jantrī of Saṃvat 1947 Śake 1812.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अचिं..........व्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने।। समस्त ज[illegible]दाधार मूर्त्तये ब्रह्मणेनमः १।।
End:	फाल्गुन श्रुदि १ वु0 रे0 ।।।।।।।।। ल ६। रा १६। ३०।।
Script:	Devanāgarī
Size:	18 x 28 cm.
Lines:	18 to 24 (Different)
Copier's Name:	Swāmī Bansīdhar
Age:	Saṃvat 1947 Śake 1812
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 156	**Manuscript No.:** 15135
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15135
Title of Work:	Śighrabodha
Title of Work in Sanskrit:	शीघ्रबोध
Name of Author:	Śrī Kāśinātha Bhaṭṭācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śighrabodha is a work about Jyotiṣa Śāstra. The MS contains four chapters called Prakaraṇa. Some folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। भासयंतं जगद्भासा न त्वा भास्वंतमव्ययं।।
End:	सफलं मस्तके कुक्षौ निष्फलं पाद पृष्ठयो।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 21 cm.
Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1900
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	46
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 157 | **Manuscript No.:** 15136

Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15136
Title of Work:	Śighrabodha
Title of Work in Sanskrit:	शीघ्रबोध
Name of Author:	Śrī Kāśinātha Bhaṭṭācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śighrabodha is a work of Jyotiṣa Śāstra. The Author devided it into four chapters called Prakaraṇa. The MS start from folio 1 b. Folio 1a has a text.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। भासयंतं जगद्भासा नत्वा भास्वंतमव्ययं ।।
End:	फाल्गुने सर्व सौभाग्य आचार्यैः परिकीर्त्तितं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 28.8 cm. (Different)
Lines:	8 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1877
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	33
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 12.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 158	**Manuscript No.:** 15137
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15137
Title of Work:	Śighrabodha
Title of Work in Sanskrit:	शीघ्रबोध
Name of Author:	Śrī Kāśinātha Bhaṭṭācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śighrabodha is a work of Jyotiṣa Śāstra. The MS contains four chapters called Prakaraṇa. Some folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। भासयंतं जगभ्दासा नत्वा भास्वंतमव्ययं।।
End:	पूर्णिमापंचमी षष्ठी द्वितीया नवमी तथा।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.7 x 25.5 cm.
Lines:	6 to 7
Copier's Name:	Hulāśrai Pāṇḍey and Devīdatta Miśra
Age:	Saṃvat 1885 Śake 1750
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper: Not good

No. of Folios: 52

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 7.6[illegible]. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Yes

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 159	**Manuscript No.:** 15138
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15138
Title of Work:	Śighrabodha
Title of Work in Sanskrit:	शीघ्रबोध
Name of Author:	Śrī Kāśinātha Bhaṭṭācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śighrabodha is a work of Jyotiṣa Śāstra. The MS contains four chapters called Prakaraṇa. Every chapter has a different name. Folio 1b has a short table on Margin.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। भासयंतं जग द्भासा न त्वा भास्वंतमव्ययं ।।
End:	फाल्गुने सर्वसौभाग्यमाचार्य्यैः परिकीर्तितं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 19.6 cm.
Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Vṛṣabhāna
Age:	Saṃvat 1890
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	37
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 160	**Manuscript No.:** 15168
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15168
Title of Work:	Śrījyotiṣacandrārkaḥ
Title of Work in Sanskrit:	श्रीज्योतिषचन्द्रार्कः
Name of Author:	Rudradeva
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrījyotiṣacandrārkaḥ is a work of Jyotiṣa written by Rudradeva. 1 to 5 folios of the MS are missing. The MS starts from folio no. 6. Some folios are missing from both sides. Due to this some text is also missing.
Beginning:	ननु..........भास्करः सातिथिः सकलाङ्गे या दानाध्ययन कर्मसु ६६ ।।
End:	अष्टौ षड्ि भशचित्रिता ज्योतिषांगैरध्यायास्तैः श्रीशदेव द्विजेष्टिः ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 31 cm. (Different)
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1751
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	84
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 14.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 161	**Manuscript No.:** 15112
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15112
Title of Work:	Ṣaṭpañcāśikā
Title of Work in Sanskrit:	षट्पंचाशिका
Name of Author:	Pṛthuyaśā
Name of Commentator:	Bhaṭṭotpala
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ṣaṭpañcāśikā is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Pṛthuyaśā the son of Varāha Mihira. The MS is with a commentary named Vivṛti by Bhaṭṭotpala.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः। सतामयमाचारोयच्छास्त्रांरभे अभिमतनमस्कारं कुर्वंति।
End:	शूद्राधिपः शशिसुतः शनैश्चरः संङक्रभवा नामिति जातिनिस्सार्यः कार्य्यं इति।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 28.8 cm.
Lines:	10 to 18
Copier's Name:	Gaṇeṣilāla
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	17
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 162	**Manuscript No.:** 15110
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15110
Title of Work:	Ṣaḍvargaphala
Title of Work in Sanskrit:	षडवर्गफल
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ṣaḍdvargaphala is a work of jyotiṣa describing the condition of Grahas when the child borns. It forms a specific chapter of Bṛhajjāmala.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ वृहज्जामले षट् वर्ग लिख्यते।
End:	पृष्टे पराजयप्राप्ति तालुके राजतछनात्।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 29.7 cm.
Lines:	11 to 13
Copier's Name:	Durgādatta Miśra
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	14
Condition:	Worm eaten, water stained, and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 163	**Manuscript No.:** 15106
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15106
Title of Work:	Saṃketa Kaumudi
Title of Work in Sanskrit:	संकेत कौमुदी
Name of Author:	Rāmprasāda Avasthī
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Saṃketa Kaumudi is an elementary treatise on horoscopy composed by Rāmprasāda. There is a table on last folio. All folio are ink stained, due to this some hand writing is illegible.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। अथ विशेषफलज्ञानार्थशंभुमतेः संकेत कौ मुदी प्रोक्तो ग्रह भाव चेष्टा विचारो लिख्यते।
End:	तदा दारिद्र दोषेण कृस्ना भ्रमतिमेदिनी इति राहु भाव फलम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.2 x 2.4 cm.
Lines:	14 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not given
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.01. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 164	**Manuscript No.:** 15098
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15098
Title of Work:	Samarasāra
Title of Work in Sanskrit:	समरसार
Name of Author:	Rāma
Name of Commentator:	Bharata
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Samarasāra is composed by Rāma the son of Suryadāsa and Grandson of Śivadāsa. The MS contains 86 stanzas. There is a commentary named Granthārthaprakāśikā by Bharta on it.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नम : । अभिवंद्य रामचन्द्र गुरुं तद्‌भक्तं स्वरग्रंथम्.... ।
End:	व्यधात्सप्राज्य स्वर शास्त्रसार रचितं रामोवसन्नैमिषे । ।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 28.5 cm.
Lines:	8 to 22
Copier's Name:	Gaṇeśilāla, son of Permeśawarī Dāsa
Age:	Saṃvat 1928 Śake 1783
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	21
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 165	**Manuscript No.:** 15164
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15164
Title of Work:	Samarsāra Saṭīka
Title of Work in Sanskrit:	समरसार सटीक
Name of Author:	Rāmacandra Somyāji
Name of Commentator:	Bharata
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Samarsāra is a work of Jyotiṣa Śāstra composed by Rāmacandra and a commentary by Bharata. Some folios of the MS have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ।। नत्वा गुरुन्समालोक्य स्वरशास्त्राणि भूरिशः ।।
End:	ग्रन्थकृतो रामचंद्रस्य भ्राता भरतो लघु विद्वान ।। कामौ नाम करातंतदूर्य्यस्य प्रकाशिनी सरलम् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 20.5 cm.
Lines:	13 to 20
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	52
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 7.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	Yes
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 166	**Manuscript No.:** 15103
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15103
Title of Work:	Sarvārtha Cintāmaṇi
Title of Work in Sanskrit:	सर्वार्थ चिन्तामणि
Name of Author:	Venkaṭeśa Ācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sarvrātha Cintāmaṇi is a treatise on Jyotiṣa Śāstra. The Author Venkaṭeśa Ācārya describes the condition of Grahas. The MS contains eight chapters called Adhayāyas.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। श्री मच्छेषगिरेस्तटाधिनिलयं श्री वेंकटेशं गुरुं।।
End:	श्री वेंकटेशो भुवि मानवानां चकार योगार्णवमत्र भूत्यै।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 28.2 cm.
Lines:	8 to 9
Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1888
Place of Copying:	Nyondhanā Nagar

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	122
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 167	**Manuscript No.:** 15317
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15317
Title of Work:	Svapnādhyāyaḥ
Title of Work in Sanskrit:	स्वप्नाध्यायः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Svapnādhyāyaḥ is a work of Jyotiṣa Śāstra. The work has been taken from any Purāṇa but the name has not given. In the MS the results of the dreams have been given.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। स्वप्नाध्यायं प्रवक्ष्यामि यमुक्तं गुरुभाषितं।
End:	दुःस्वप्न दृश्यते तेषां सुस्वप्नं च भविष्यति।।८०।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.2 x 14.5 cm.
Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Gaṅgā Visan Miśra
Age:	1840 (Saṃvat or Śake has not mentioned)
Place of Copying:	In the middle of Nirdhanā Village.

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 23.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 168

Manuscript No.: 15141

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15141

Title of Work: Svarodaya

Title of Work in Sanskrit: स्वरोदय

Name of Author: Ascribed to Lord Śiva.

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Svarodaya is a work of Svara-Śastra. In the MS the ślokas are in Sanskrit and their commentary is in Hindi. Some text is m issing from the border due to worm eaten. Some folios have table of Jyotiṣa. There is a table on folio 8b which is difficult to read. The great God Śiva is credited with the creation of the Svarodaya Manuscript. The source of the text is a dialogue between Śiva and Śakti.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। अथ स्वरोदय सटीक लिख्यते कवित।

End: क्रीडाभिर्लोलोप द्वंद्वेवानाघ्रीराः सर्वेश्याभि क्रीडतिभिः।।

Script: Devanāgarī

Size: 24 x 15 cm. (Different)

Lines: 20 to 28

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been by National Archives Govt. of India in 21.9.1961. A ccording to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 169

Manuscript No.: 15125

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15125

Title of Work: Sāriṇīkalpavallī

Title of Work in Sanskrit: सारिणीकल्पवल्ली

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Sāriṇīkalpavallī is an astrological work containing tables. Folio no. 1 to 4 is not in serial and folio 1, 2 and 24 are bound inverse position.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ।। अथ पद्धतिकल्पवल्ली सारिणीतत्रादौ दृष्टि सारिणी ।।

End: Tables are there.

Script: Devanāgarī

Size: 13.2 x 31 cm.

Lines: 21 (Different)

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	24
Condition:	Worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 170	**Manuscript No.:** 15151
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15151
Title of Work:	Sāriṇī Khaṇḍa Khādira
Title of Work in Sanskrit:	सारिणी खण्ड खादिर
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sāriṇī Khaṇḍa Khādira is an astrologieal work. All folios have tables of Jyotiṣa. Unreadable writing on different folios. Some folios are worm eaten on both sides.
Beginning:	३७०००० देशांतर लिप्तादि: ०१२४ ।।
End:	Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 24 cm.
Lines:	21 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten. water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 171	**Manuscript No.:** 15121
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15121
Title of Work:	Sāriṇikhaṇdaravādi
Title of Work in Sanskrit:	सारिणीखण्डरवादि
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sāriṇikhaṇdaravādi is a famous work of Jyotiṣa. There is no name of the Author in the MS. All folios have tables of Joytiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। देशांतरलिप्तादि।। ०।। २४ ।। ऋणं।।
End:	Only tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 28.2 cm.
Lines:	12 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	14
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 172	**Manuscript No.:** 15123
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15123
Title of Work:	Sāriṇīgrahlāghava
Title of Work in Sanskrit:	सारिणीग्रहलाघव
Name of Author:	Prema
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sāriṇīgrahlāghava is an astrological treatise composed by Prema. All folios have tables of Jyotiṣa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। न त्वा गणेशस्य पदारविदं हरिं च सूर्यप्रमुखान्ग्रहांश्च।
End:	Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 28.3 cm.
Lines:	14 (Different)
Copier's Name:	Gaṇeśilāla
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good

No. of Folios:	24
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 173	**Manuscript No.:** 15152
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15152
Title of Work:	Sāriṇīgrahalāghava
Title of Work in Sanskrit:	सरिणीग्रहलाघव
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sāriṇīgrahalāghava is an astronomical work. All folios have tables of Jyotiṣa. Some text is missing on borders due to worm eaten. Folios no. 12b and 14a have been written inverse.
Beginning:	..............तिथिवारा दौ २८ कला:.............. ।
End:	इति ग्रहलाघव सारिणि: समाप्त: ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	16 x 26 cm.
Lines:	18 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 174	**Manuscript No.:** 15124
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15124
Title of Work:	Sāriṇīsiddhakheṭi
Title of Work in Sanskrit:	सारिणीसिद्धखेटी
Name of Author:	Harānanada
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Sāriṇīsiddhakheṭi is an astrological treatise composed by Harānanda. Besides folio no. 1a, all folios have tables of Jyotiṣa Śāstra.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः शाकः सप्तयमे षुचंद्र ।। १५२७ वियुतः स्थाप्यस्त्रिधास्यु: क्रमाच्चंद्रेष्वी द्रुनिशोकराग्नि ।।
End:	Tables are there.
Script:	Devanāgarī
Size:	15.7 x 28.6 cm.
Lines:	15 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1400
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	50
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 175

Manuscript No.: 15122

Subject: Jyotiṣa

Accession No.: 15122

Title of Work: Sāriṇī Suryasiddhānta

Title of Work in Sanskrit: सारिणी सूर्यसिद्धांत

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Sāriṇī Suryasiddhānta is an astronomical work containing tables based on Suryasiddhānta.

Beginning: रविवाटिका वंशावल्यां देशांतरं २३ विकलादि ऋणं सूर्यस्त गाति ४६१०८ – Tables are there.

End: भय विभागाधिक हीन खेटाकलीकृतात् स्वयजनेन भक्तया इति श्री सूर्य सिद्धांन्तमतेन – Tables are there.

Script: Devanāgarī

Size: 13.5 x 30.5 cm.

Lines: 20 (Different)

Copier's Name: Gaṇeśilāla

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	13
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 176	**Manuscript No.:** 15179
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	15179
Title of Work:	Hāyanaratnam
Title of Work in Sanskrit:	हायनरत्नम्
Name of Author:	Balabhadra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Hāyanaratnam is a treatise on Jyotiṣa Śāstra composed by Balbhadra. According to the MS Balbhadra was the son of Dāmodara. Some folios of the MS are m issing from borders due to being worm eaten. Due to this some handwrit ing is also missing. Some folios have tables of Jyotiṣa. The MS is incomplete.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। गणाधिपं रामगुरोः प्रदाज्नं दामोदराख्यं पितरं च नत्वा।।
End:	धनस्थ कवौ धान्य लाभौ................. ।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 23 cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	107
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 177	**Manuscript No.:** 52
Subject:	Jyotiṣa
Accession No.:	17327
Title of Work:	Horāpārāvārsetu
Title of Work in Sanskrit:	होरापारावारसेतु
Name of Author:	Śrī Viṭṭhal
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Horāpārāvārsetu is a work of Jyotiṣa Śāstra. Some folios have table of Jyotiṣa.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः कर्णास्यफालैश्चालिता नाम लीनां पंचङगीताकर्ण घोष प्रमोदः..... ।
End:	भवेद्वक्ता सुनखी सुमति शुचिः स्थूल दंताधर ग्रीवका ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 29.5 cm. (Different)
Lines:	9 to11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned

Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	79
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

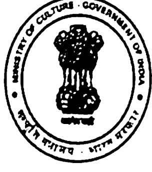
शीर्षक	पृष्ठ संख्या
अर्थालंकारमंजरी	1
अंलकारकुल प्रदीप	3
कुवलयानन्द	5
रसमंजरी	7
विदग्धमुखमण्डन	9, 11
वृत्तरत्नाकर	13
श्रुतबोध	15
अठाईस नाम	17
आकाशे दीपदान	19
आचार प्रदीप	21
ऋषि पंचमी माहात्म्य कथा	23
कर्म विपाक	25
कर्मविपाकसंहिता	27
कार्तिक माहात्म्य	29
कार्तावीयदीप	31
कायस्थोत्पत्ति चित्रगुप्त कथा	33
कुशकण्डिका	35
केदारकल्प	37
गंगा माहात्म्य	39
गया माहात्म्य	41
गोकर्णनिरुपण	43

लेखक	पृष्ठ संख्या
निर्मल भट्ट	1
आचार्य विश्वेश्वर	3
अप्पयदीक्षित	5
श्री भानुदत्त मिश्र	7
धर्मदास	9, 11
केदार भट्ट	13
कालिदास	15
नागदेव उपाध्याय	21
शंकर भट्ट	25
सूर्यसेन मही महेन्द्र	47
विजयरामआचार्य	51
गणेश दत्त	53
ऋषि पाराशर	55, 249, 251
हलायुध	59
महीधर	61, 63
ऋषि याज्ञवल्क्य	65
नीलकण्ठ भट्ट	79
कवि रत्न	81
श्री मणिकान्त मिश्र मुनि	87
रामचन्द्र आचार्य	93

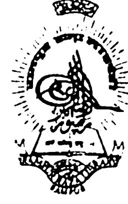
लिपिक

	पृष्ठ संख्या
गंगादत्त पाण्डेय	
दुर्गादत्त मिश्र	11, 273
बद्रीदास	13, 55, 89, 323
परमानन्द	15
बुद्धसेन	21
भवानी प्रसाद तिवारी	27
माधव	33
गिरिधारी लाल मिश्र	41
देव शंकर द्विवेदी	47, 77, 99, 149, 165, 195, 207, 219, 233, 239, 267, 269
टीकाराम	
	51
महानन्द	
	53
तल्फीराम	
	57
यमुनादास	
	59, 85
पण्डित दयाराम तिवारी	
	59
तल्फी	
	63
कुलमणि पाण्डेय	
	65
चन्द्रसेन	
मोहन	71
हरि प्रसाद मिश्र	87
	93
	97, 155, 169, 187, 331

टीकाकार	पृष्ठ संख्या
राजाराम वर्मा	119
श्रीधर स्वामी	123
भारद्वाज लक्ष्मण दैवज्ञ	167
श्रीपति	199
सूरिमन प्रसाद	211
विष्णुदास	251
श्री भानुचन्द्र	301
भट्टोत्पल	321
भरत	327, 329



रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
नवीन प्रकाशन



तारीख़–ए–मुहम्मदी– भाग–1	40/–
तारीख़–ए–मुहम्मदी – भाग–2	1050/–
नात–ए–मुहम्मदी – (ज़ियाउद्दीन बरनी)	600/–
नेहजुल बलाग़ा	1200/–
वाल्मीकि रामायण (सुमेर चंद) 3 जिल्दे (पूरा सैट)	5000/–
हिन्दुस्तान मेरी नज़र में (फ़तहुल्ला अन्ताकी)	200/–
कैटलॉग ऑफ पर्शियन मेनुस्क्रप्टस आफ रज़ा लाइब्रेरी– भाग–1	500/–
कैटलॉग ऑफ पर्शियन मेनुस्क्रप्टस आफ रज़ा लाइब्रेरी– भाग–2	350/–
दीवान–ए–बाबुर	250/–
तारीख़–ए–फ़िरोज़ शाही (ज़ियाउद्दीन बरनी)	1200/–
असरारिया कशफ़–ए–सूफ़िया (सैयद मुहम्मद कमाल संभली वास्ती)	1000/–
फ़ेहरिस्त उर्दू मख़्तूतात	600/–
कैटलॉग ऑफ टर्किश मेनुस्क्रिप्टस	175/–
कैटलॉग ऑफ पश्तो मेनुस्क्रप्टस	200/–
रज़ा लाइब्रेरी जरनल नं0 28 (उर्दू)	400/–
रज़ा लाइब्रेरी जरनल नं0 29 (अंग्रेज़ी)	350/–
गंज–ए–ग़राइब (मीर मेहदी मजरूह)	250/–
मेघदूतम्	250/–

☎ 0595-2325045

E-mail: directorrazalibrary@gmail.com

Website : www.razalibrary.gov.in